अध्याय :- पहला

लक्ष्मी नारायण मिश्र

अनुक्रमणिका

१) जीवन परिचय

२) मिश्रके जीवनके उल्लेखनीय अवसर

३) मिश्रका वंशवृक्ष

४) मिश्रके नाटकोंका वर्गीकरण

५) मिश्रके समस्या नाटकोंका परिचय

६) मिश्रके समस्या नाटकोंके पात्रोंका सामान्य परिचय

७) मिश्रके सांस्कृतिक नाटकोंका परिचय

८) मिश्रके समस्या नाटकोंमें व्यक्त समस्याएँ।

९) मिश्रके सामाजिक नाटकोंका उद्देश्य तथा नाटकोंको विशिष्ट वर्गमें अंकित करनेके कारणोंका विश्लेषण।

लक्ष्मी नारायण मिश्र

(१) जीवन परिचय :

लेखककी कृतियोंका मूल्यांकन जिस वातावरणमें वह पाता है, उस वातावरणके आधारपर किया जा सकता है। आजका युग औद्योगिकरणका युग है। इस जटिल जीवनमें किसीके जीवनकी मानसिक प्रतिक्रियाओंको जाननेकी न तो सुविधा है न साधारण व्यक्तिमें इनके विश्लेषणकी क्षमता है।

मिश्रजीका जन्म पौष शुक्ल १ संम्वत १९६० विक्रमी (इसवी सन १९०३) को जिला आजमगढ के बस्ती नामक ग्राममें हुआ। पिता पं. कमला प्रसाद मिश्र अपने जिलेके उच्चकुलिन मानेजाते थे। जन्मसे विशिष्ठ गोत्री सार्वनी मिश्र ब्राह्मण थे। लगभग सवातीन सो वर्ष पहले तक आपके जिला बस्तीके पढनी नामक ग्रामके एक विशेष विस्तृत भूखंडके स्वामी थे। आगे चलकर वे वहाँसे निकले। अनेक स्थानोंपर रुकते हुए देवरियाके मझौली राज्यमें आये और वहाँसे ढाई सौ वर्षोंके आसपास आजके आजमगढ जिलेके पूर्वी भागमें आ बसे। प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम (१८५७) में आपके प्रपितामह भी आजमगढमें कुंवरसिंह के दरबारमें संम्मिलित हुए थे। सामन्ती संस्कारोंमें घुडसवारी मांसाहार और शतरंज तो इनके पिताकेसमयतक चलता रहा। मिश्रजीका विवाह निश्चित हुआ पर कोईदाम, दहेज लेनेसे इन्कार किया। कई पिढियोंसे सामंती और अभिजात वर्गी संस्कार, होनेके कारण इस वंशकीपरंपराओंमें ब्राह्मणत्व, क्षात्रियत्व का एक अपूर्व संमिश्रणसा रहा।

मिश्रजी सात वर्षोंकी उम्रतक रोगी एवं निर्बल रहे। बाल्य कालमें पढनेके प्रति रुचि न होनेके बावजूदभी पिताके डरसे पढाई जारी रही। पौचवी वर्षोंमें विद्यारंभ हुआ। गांवकी पाठशालामें चौथी, घोशीके मिडिल स्कूलमें

सातवी पास कर वे १९१९ में इलाहाबाद के मौडर्न हायस्कूलमें प्रविष्ठ हुये । यहीपर उनकी अंग्रेजी शिक्षा शुरु हुवी । फौरन दूसरेही वर्ष वे राष्ट्रीय विचारोंके आकर्षणमें वहींसे सेंट्रल हिंदी स्कूल काशी, को गये । सन १९२१-२२ में हिंदी के कई प्रतिभाशाली छात्र उनके सहपाठी थे । सन १९२४ में इंटरकी ग्यारहवी कक्षामें प्रवेश किया । १९२८ में राजनिती इतिहास और अंग्रेजी साहित्य विषयोंके साथ बी.ए. परिक्षा पास की ।

१९२३ में वे विवाहबध्द हुये। १९२८ में पहले पुत्र विश्वांभर नाथ मिश्र जी का जन्म हुआ । फिर तीन तीन वर्षों के अंतरसे हरिश्चंद्रनाथ मिश्र और रविंद्रनाथ का जन्म हुआ । १९३६ में रविंद्रनाथ को छोडकर धर्मपत्नी परलोक सिधार गई । जिस समय मिश्रजी केवल ३२ सालके थे ।

जीवनके [illegible] विभिन्न क्षेत्रोंमें स्वास्थ्य दृष्टिकोनको खोजनेकी चाह आपमें प्रारंभसेही रही । इसलिये छात्र जीवनसेही विभिन्न विषयोंकी पुस्तकोंद्वारा ज्ञानभांडार समृध्द कर ले रहे । भारतीय साहित्यके प्रति आस्था मिश्रजीको अधिक थी । विदेशी साहित्य भी ज्ञान वृध्दिके लिये अधिक पढते रहे । मानसविज्ञान इतिहास कलाशास्त्र दर्शन समाजशास्त्र के प्रधान ग्रंथोसेभी वे पूर्णतया परिचित है । वेद-उपनिषाद, गीता, श्रीमद् भगवत् संस्कृत भाषाके काव्यग्रंथ पतंजली का योगसूत्र, वात्सायनका कामसूत्र, इन ग्रंथोसे वे प्रभावित रहे ।

युवावस्थामें राष्ट्रचिंतनसे वे गहरे प्रभावित थे। स्वतंत्रताकी उत्कट अभिलाषा उन्हे थी। सन्यासी नाटकका राजनितीक प्रसंगोसे मुखरित हो गया । १९३५ में जब वे क्षयसे ग्रसित हो गये तब लेकन उनके शल्य चिकित्सालयमें भरती हुये । १९४२ में पुनः उन्हे शत्रुबर बनाकर आजमगढ जेलमें नजरबंद कर लिया गया।

.. ३

- १ -

साहित्य सृजनकी लगनतो मिश्रजीको ११-१२ वर्षोकी आयुमेंही लग गई। मिडिल स्कूलमें छिपे छिपे सरस्वती के पन्नोंमें वे अपनी साहित्यीक कृति व्यक्त करते रहे। कविताकी तुकबंदियाँभी बनती रही। सेंट्रल हिंदी स्कूल, ई काशीके साहित्यिक वातावरण मे हुं मिश्रजीका साहित्यकी ओर वास्तविक अर्थोमे झुकाव हुआ। मैट्रिक परिक्षा देते देते २३-२४ में अपने छायावादी कविता पुस्तक "अंतर्जगत" की रचना कर दी। "अंतर्जगत" के प्रकाशनके साथही छायावाद के अन्य यशस्वी कवियोंका उत्थान हुआ। प्रसादजी का "आँसू" कई वर्षों बाद लिखा गया। इसके पश्चात आप नाटक रचनामें प्रविष्ट हुये। इंटरकी माध्यमिक शिक्षाके भीतरही आपने "अशोक" नाटक रचा।

कॉलेज जीवनमें भारतीय एवं पाश्चात्य विचार धारासे प्रभावित रहे। विविध, ग्रंथोकी पढाईके कारण उनके मस्तिष्कमें भारतीय जीवन प्रणाली का वैयक्तिक एवं तर्क संम्मत रुप सिध्द हुआ। हमारा नवयुवक समाज स्वत्वको त्यागकर पाश्चात्य, धाराओंकी ओर जा रहा है। जिसमें अंधानुकरण है। मनोविकारोंकी ग्रस्तता उसमें आ रही है। इन तथ्योंका मिश्रजीने सूक्ष्मतासे अध्ययन किया। इन्ही बातोंकी सूक्ष्म ठेस उन्हे पहुँची और समाजको यथार्थ रुपमें सामने रखनेकी सोची। फलतः "सन्यासी" नाटककी रचना उन्होने बी.ए.के शिक्षण कालमें कर दी। उस समयकी भावनाओंके आवेगको स्वीकार करते हुए मिश्रजीने स्वयं कहा -

"समस्या नाटकोंकी रचना विवशता की देन है, ऐसी प्रकार जैसे प्रेम"। (१)

•• ४

(१) मैं इनसे मिला - पद्मसिंह शर्मा कमलेश पृ.१४१

- ४ -

इसके पश्चात सहासका मंदिर, मुक्तिका रहस्य, राजयोग, सिंदुरकी होली, आधीरात आदि पांच समाजिक नाटक लिखे। २० अगस्त १९३५ को उनके अनुज गिरिजाशंकर की दारूण हत्या होनेपर वे हायके असाध्य रोगीके रुपमें चिकित्सालयमें भर्ती हो गये। जिससे लेखनी ठंडी पड गयी। इसके बाद सालभरमें पत्नीने भी साथ छोडा। मिश्रजीके सारे आकर्षण अनुराग और कर्मके सारे स्त्रोत सूख गये। १९३४ में "आधीरात" लिखा। फिर १२ वर्षोंके लंबे अर्से के बाद "नारदकी वीणा" लिखा गया। १९३४ से १९४६ तक १२ वर्षों के लिये हिंदी साहित्य उनकी प्रतिभासे बहुतही वंचित रहा।

१९४६ के बाद सतत उनकी लेखनी चलती रही। एकसे एक उत्तम नाटक अर्पित करती रही। सन १९३४ तक उन्होने छ: सामाजिक नाटक लिखे। १९४६ के पश्चात वे सांस्कृतिक नाटककार बन गये। और छह ऐतिहासिक एवं दो पौराणिक नाटक प्रकाशित हुये। युग प्रवर्तक महिपियोंकी आधार बनाकर भी उन्होंने तीन जीवनीमुलक नाटक लिखे और एकांकी - कारोंमें अच्छी ख्याती प्राप्त की। महात्मा गांधी की हत्याके पश्चात वे उस काव्यकी एक पंक्ति भी न लिख सके। मानो प्रेरणाही समाप्त हो गयी। मिश्रजीने अपनी प्रतिभा द्वारा युग को नया मोड देनेमें अग्रेसर रही। छायावादी कविता के आरंभमेंही उनका "अंतर्जगत" प्रकाशमें आया। नाटकके क्षेत्रमें समस्या प्रधान नाटकोंके प्रथम प्रणेता मिश्रजी है। इसके पश्चात भारतीय रसवादी धाराको हिंदी नाट्य साहित्यमें प्रतिष्ठापित करनेका श्रेयभी इन्हेंही है। [redacted] जीवनीको आधार बनाकर लिखे गये नाटकमें भी केवल आपको ही सफलता मिली।

..५

मिश्रजीका व्यक्तित्व प्रखर ही नहीं प्रभावी है । इनके साहित्यमें साहित्य, कला, जीवनदर्शन के विचार दिखते हैं । लगता है, एक झरोकेकी प्रवाहिता इसमें है । जो बात, मिश्रजी कहना चाहते हैं, उसे वे बडे ही तर्कपूर्ण ढंगसे कहते हैं । नाटकोंकी भूमिकाकी शैली बडी ही प्रभावी है । सारे विचारोंकी अनुभूतिको उन्होंने आत्मसात कर लिया है ।

मिश्रजी के व्यक्तित्वका दूसरा गुण नये विचारोंको ग्रहण करनेकी उदारता भरा है । उत्तरोत्तर विकसित विचारोंको उन्होंने स्वीकारा । अपनी रचनाओंमें उन्हें बिना झिझक परिवर्तित किया । वास्तवमें बुद्धिके निकषपर सत्यको परखनेवाला व्यक्ति कभी भी रुढिवादी नहीं बन सकता । इसीलिये तर्कपूर्णता के कारण कोई भी इसे दुराग्रही नहीं कह सकता । प्रत्येक महान एवं मौलिक लेखकको अपनी मौलिकताका आस्वादन करानेके लिये जनताकी अभिरुचीका निर्माण करना चाहिये ।

मिश्रजी विडंबनाके शिकार तो बन गये । संयोगसे वे भारतीय संस्कृती के रंगमें रंग हुये साहित्यकारको केवल यथार्थवादी शैलीके कारण आ. शुक्ल जैसे आलोचकोंने विदेशी भावमें देखा । इसीलिये मिश्रको अपना पक्ष अपने नाटकोंकी भूमिकामें प्रस्तुत करना पडा । यह भूमिकाये मिश्रजीको समझानेमें सहायक होती है । अंतमें -

अंतर्जगत की ज्योतिसे प्रेरित किया आंसू की बूंद बूंद से लोगोंको मिश्रजी की युगप्रवर्तक प्रतिभाको मान्य करना पडा ।

.. ६

- ६ -

मिश्रजी एक अनोखे व्यक्तित्वका धनी:

मिश्रजीका व्यक्तित्व आधुनिकता एवं प्राचीनता, भारतीय, तथा प्रत्य देशीय तत्वोंका योग है । मिश्रजीके संस्कार सनातनीय जरूर है पर फिरभी वे स्वीकार्य है । जो अनंत है, भारतीय होकरभी विश्वजनीनता उनमें है । उन्होंने हिंदी को एक नई चिंतन पद्धती दी । साहित्यमें उठे संघर्ष की प्रतिछाया जीवनमें पडी और उनके संकल्प एवं दृढता इन्ही संस्कारोंका परिणाम है ।

मिश्रजी अगाध पांडित्य तथा प्रचंड प्रतिभाकी एक ज्योत है । उनमें कवित्व, तर्क शक्तिका मणिकांचन योग है । वे व्याख्यात्मा है, रचयिता है, मर्मस्पर्शी है, और तर्कीकता भी उनमें है। भारतीय संस्कारोंकी प्रबलता ने इनमें लोकोत्तर शक्तिसंचार किया । वाणीमें सत्यका ओज, पांडित्यका विवेक, एवं कविकी क्रांतीदर्शिता टपकती है। इसीने उन्हे अजेय वक्ता बनाया और इनकी रचनाको अद्भुत शक्ति दी है ।

नाटककी मौलिक रचना का एक सत्याग्रहका कारण उनकी सृजन शक्तिका प्रतिक है । राष्ट्रीयताके साथ साथ वैश्विक चेतना भी इनमें दिखाई पडती है । इसीकारण मिश्रजीके प्राचीन संस्कार एवं उच्च शिक्षा प्रणालीके प्रभावमें संघर्ष स्वाभाविक है परिणामत: इनके नाटकके प्रमुख पात्र भी असमंजस्य स्थिती मे उलझ गये है ।

मिश्रजीने सदा भारतीयताके उचित मुल्यांकनको ग्रहण किया । इनके साहित्यमेंभी इसकी प्रचिती आती है । भारतीय जन मान्यताओं एवं चिंतन

..७

दर्शन को साहित्यमें स्थापित करनेकेलिये सतत वे प्रयत्नशील रहे ।

"काल और सीमासे विमुक्त मायमतिकी माया यथा, कविकी अबाध गति कल्पने । बंधन कहाँ है तुझे ? (१)

यह सत्य है कि जो यथार्थ है वह आदर्श नही हो सकता । कल्पनाकी रंगीनी एवं असंगति साहित्य और कलाका मानदंड नही बन सकती । जीवनकी पाठशालामें बैठकर साहित्यकार अपनी कला सीखता है। जीवन अनुभवसे परे वह कहीं कुछ भी नही ढूंढता । क्योंकि नाटककार मिश्रजीकी शक्ति इनकी मौलिक विचारधारा है ।

चाहे वह किसीभी स्तर में हो । ऐतिहासिक पौराणिक अथवा सामाजिक नाटक हो । अर्थात हम इतना कह सकते है कि -

> "ब्राह्मणत्वका अनुपम आलोक और भारतीय संस्कृतिका उदार स्वर्णिम चित्र इनके नाट्य साहित्य की सबसे बडी देन है ।" (२)

..८

---

(१) ल.ना. मिश्र अशोक महाकाव्य से हिंदी नाटक और ल.ना. मिश्र जीवन त्रिपाठी पृ. ४४६

(२) हिंदी साहित्य कोश भाग २ पृष्ठ ५१५

- ८ -

(२) मिश्रके जीवनके उल्लेखनिय अवसर तथा उनके कृतित्वके विशिष्ट अंग :

सन १९२९ में हिंदि साहित्य संमेलनमें इंदोर अधिवेशनमें मिश्रका भाषण "साहित्यमें बुध्दिवाद" तथा प्रेमचंदद्वारा "हंस" मे उसकी आलोचना और उसका प्रत्युत्तर भारत दैनिक प्रयाग) में उसी समय प्रकाशित हुआ था ।

गांधी अभिनंदन ग्रंथ में संकलित समस्त अंग्रेजी कविताओंका हिंदी अनुवाद मिश्रने किया था । नेहरुन अभिनंदन ग्रंथ म मिश्रका एकांकी (एक दिन) छपा था । जो हिंदीका एक मात्र एकांकी है । जिसे इसमें स्थान दिया गया है। संपादक मंडलने लेखक परिचयमें मिश्रको आधुनिक हिंदी नाटकका जन्मदाता स्वीकार किया है ।

डॉ.पी. मुकर्जीने अपनी पुस्तक "मॉडर्न इंडियन आर्ट" मे इनके नाटक "मुक्तिका रहस्य" का उल्लेख हिंदी की सर्वप्रथम प्रगतिशील रचनाके रुपमें किया है।

डॉ.भुपेंद्रनाथ दत्तने [illegible] अपनी पुस्तक "साहित्येर कथा" में मिश्रजीकी सबसे प्रगतिशिल लेखक स्वीकार किया है । केंद्रिय शिक्षा सचिवालयके तत्वविधानमें [illegible] [illegible] गुज्रात की भाषण यात्रा इन्होंने २२ दिसंबर १९५९ से ता १० जनवरी १९६० तक की थी । जिसमें राजकोट सोमनाथ, द्वारका, इ. में इनके भाषणोंका आयोजन हुआ था । इसके अतिरिक्त आपने अखिल भारतीय हिंदी [illegible] साहित्य संमेलन, हैद्राबाद, अधिवेशन [illegible] साहित्य परिषद (सन १९६०) के अध्यक्ष पदसे भाषण दिया था । (मुद्रित) [illegible] प्रांतिय

..९

हिंदी साहित्य संमेलनके अध्यक्ष पदसे १९५४ में अपना भाषण दिया था । (मुद्रित)

उत्तर प्रदेशीय हिंदी साहित्य संमेलनकी साहित्य परिषदका उद्घाटन भाषण १९६१ में (मुद्रित) किया था । कलकत्तेकी नाट्य संस्थाओंने कई बार आपका स्वागत एवं अभिनंदन किया । वाराणसीमें आयोजित कामायनी संमेलन में आपको अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया । काशी नागरी प्रचारिणी सभाने कई बार जयंतियाँ मनाई । विद्वानोंने मुक्तकंठसे आपकी साहित्य साधनाकी प्रशस्ति की है ।

(२) <u>लक्ष्मीनारायण मिश्रका वंशवृक्ष</u> : (१)

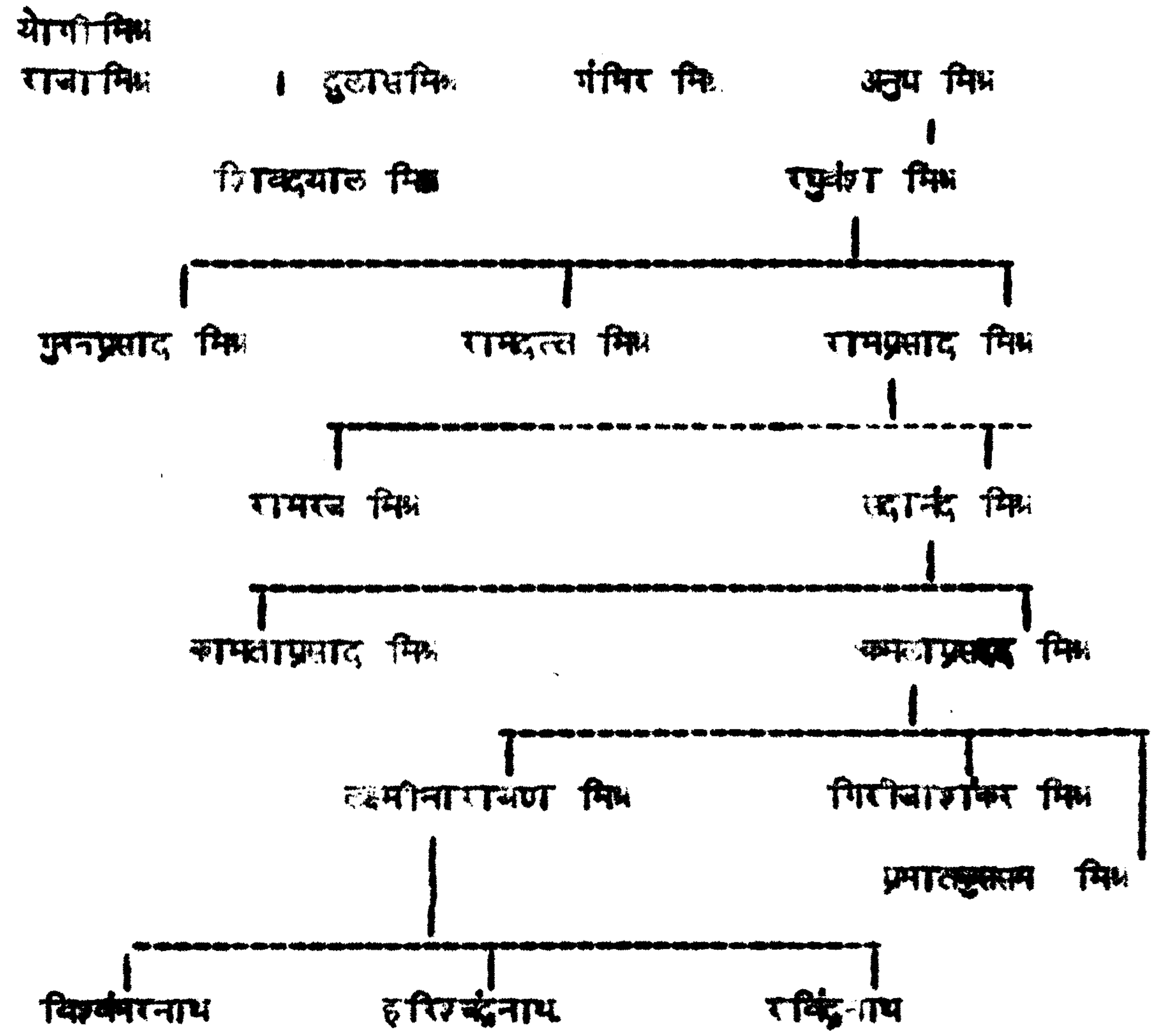

(१) हिंदी नाटक और लक्ष्मीनारायण मिश्र लक्ष्मण त्रिपाठी पृ.४४८ प्रथम संस्करण एम. फिल.

- १० -

स्वर्गीया जननी - श्रीमती सहोदरा देवी

स्वर्गीया धर्मपत्नी - श्रीमती रामदुलारी देवी

(४) मिश्रजीके नाटकोंका वर्गीकरण :

नाटककार अपने विचारोंकी अभिव्यक्त करनेकेलिये किसी एक बिंबको अपना माध्यम बनाता है । यह बिंब अतीत वर्तमान या परिवार या समाजका हो सकता है या मानसिक भौतिक, व्यक्तिगत समष्टिगत होता है । यह बिंब प्रेक्षक के मनपर एक प्रभाव डालता है ।

शास्त्रीय विचारकी दृष्टि सभी नाटक वस्तुतः कथावस्तु विचार चरित्र आदि विभिन्न तत्वोंकी एक संश्लिष्ट इकाई है । किसी नाटकमें कथानकपर बल है तो किसी में चरित्र पर बल है। किसी नाटकपर शिल्पसंगठनपर । नाटक करने जिसपर अधिक जोर दिया है वह नाटकका आधार माना जा सकता है । इसी आधारपर घटना प्रधान, विचार प्रधान, चरित्र प्रधान, रसप्रधान, नाटक इस प्रकार वर्गीकरण होगा । बिंब और रूप विधानके आधारपर मिश्रके नाटकोंका वर्गीकरण निम्न प्रकारसे हो सकता है । (१) (२)

---

(१) ल.ना. मि. के सामाजिक नाटक - भारत भूषण पठाण चड्डा अध्याय दूसरा (ग) पृष्ठ ६६.

(२) हिंदी नाटक और लक्ष्मीनारायण मि. - बच्चन त्रिपाठी संस्करण पृष्ठ ४४९.

.. ११

क्र.नं.	नाटकका नाम		प्रकाशन तिथी	लेखकके कथानुसार लेखन तिथी
(१)	अशोक	..	१९२७	१९२६
(२)	संन्यासी	..	१९२९	१९२८
(३)	राक्षसका मंदिर	..	१९३१	१९३०
(४)	मुक्तिका रहस्य	..	१९३२	१९३१
(५)	राजयोग	..	१९३४	१९३२
(६)	सिंदूरकी होली	..	१९३४	१९३३
(७)	आधी रात	[illegible]	१९३७	१९३४
(८)	नारदकी वीणा	..	१९४६	-
(९)	गरुड ध्वज	..	१९४६	-
(१०)	दशाश्वमेध	[illegible]	१९४९	-
(११)	वत्सराज	..	१९५०	-
(१२)	वितस्ताकी लहरे	..	१९५२	-
(१३)	चक्रव्युह	..	१९५५	-
(१४)	कवि भारतेंदु	..	१९५५	-
(१५)	वैशालीमें वसंत	..	१९५५	-
(१६)	जगद्गुरु	..	१९५८	-
(१७)	मृत्युंजय	..	१९५८	-
(१८)	धरतीका हृदय	..	१९५८	क्र. १२

(१९)	अपराजित	..	१९६१	-
(२०)	चित्रकूट	..	१९६१	-
(२१)	वीरशांब	..	१९६७	-

<u>लक्ष्मीनारायण मिश्रके नाटकोंका वर्गीकरण:</u>

" भारत भूषण चड्डा, शशिशेखर नैथानी, कमल त्रिपाठी, गिरिश रस्तोगी, और सावित्री स्वरूप आदिक महाशयोंने मिश्र के नाटकोंका चार भागोंमें वर्गीकरण किया है। "   (१)

(१) सामाजिक (समस्यामूलक) नाटक।

(२) ऐतिहासिक (सांस्कृतिक नाटक।

(३) पौराणिक नाटक।

(४) चरित्रमूलक (जीवनी) नाटक।

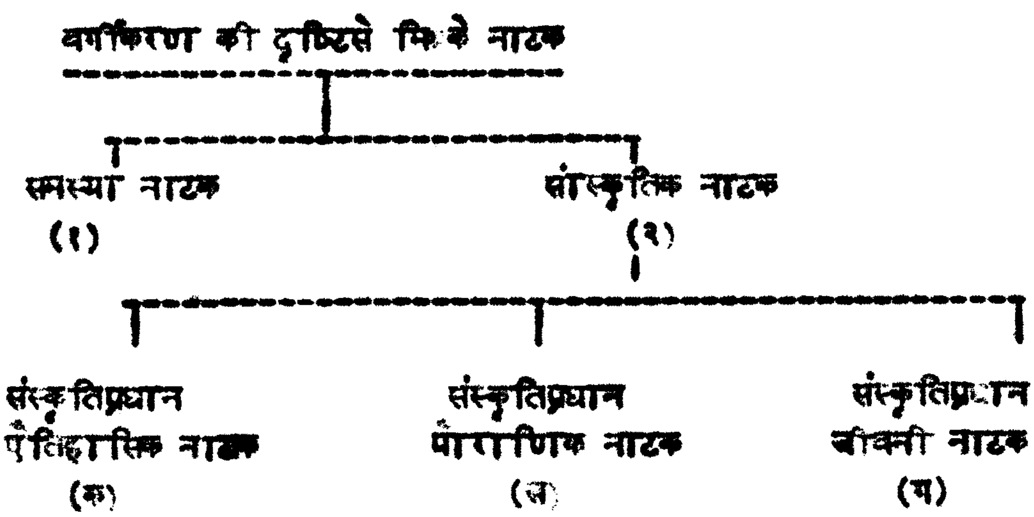

<u>समस्या नाटक</u> :(१)

संन्यासी राक्षसका मंदिर, मुक्तिका रहस्य, सिंदूरकी होली, आधीरात

(१) भारतभूषण चड्डा, - सामाजिक नाटककार मिश्र
पृ.१६१ संस्करण

सांस्कृतिक नाटक (१) (क)

अशोक, नारदकी वीणा, गरुडध्वज, वत्सराज, दशाश्वमेध, वितस्ताकी लहरें, वैशालीमे वसंत, धरतीका हृदय, वीरशंख .

पौराणिक नाटक (ख)

चक्रव्यूह, अपराजित, चित्रकूट

जीवनी नाटक (ग)

कवि, भारतेंदु, जगद्गुरु, मृत्युंजय

-०००-

विषयके आधारपर मिश्रजीके नाटकोंका वर्गीकरण

वर्गीकरण चार वर्गोंमे किया जा सकता है ।

(१) सामाजिक नाटक

(२) ऐतिहासिक नाटक

(३) पौराणिक नाटक

(४) जीवनी या चरित्रमूलक नाटक

सामाजिक नाटक :

(१) सन्यासी	..	१९२९
(२) राक्षसका मंदिर	..	१९३१
(३) मुक्तिका रहस्य	..	१९३२
(४) राजयोग	..	१९३४
(५) सिंदूरकी होली	..	१९३४
(६) आधीरात	..	१९३७

.. १३

ऐतिहासिक नाटक :

(१) अशोक .. १९२७

(२) वत्सराज .. १९५०

(३) दशाश्वमेध .. १९४९

(४) गरुड़ध्वज .. १९४६

(५) वितस्ताकी लहरें .. १९५३

(६) वैशालीमें वसंत .. १९५५

(७) धरतीका हृदय .. १९६१

पौराणिक नाटक :

(१) नारदकी वीणा .. १९४६

(२) चक्रव्यूह .. १९५३

(३) अपराजित .. १९६२

(४) चित्रकूट .. १९६२

जीवनी या चरित्रमूलक नाटक :

(१) भारतेंदु .. १९५५

(२) जगद्गुरु .. १९५८

(३) मृत्युंजय .. १९५८

शिल्पसंगठनकी दृष्टिसे सामाजिक नाटकोंका वर्गीकरण:

(१) समस्या नाटक : १) सन्यासी .. १९२९

२) आधीरात .. १९३७

.. १५

(१) <u>विचारप्रधान नाटक</u> : १) राक्षसका मंदिर (प्रतिक नाटक) .. १९३१

२) मुक्तिका रहस्य .. १९३२

३) राजयोग .. १९३४

(२) <u>समस्या एवं घटना प्रधान नाटक</u>:

१) सिंदूरकी होली १९३४

-oo-

- १६ -

(५) लक्ष्मीनारायण मिश्रके समस्या नाटकोंका परिचय :

(१) सन्यासी (१९२७)

सन्यासी मिश्रका पहला समस्यानाटक है । इस नाटककी रचना १९२७ मे की गई । इस नाटकमें प्रथम भूमिकाके रूपमें अपने एक आलोचक मित्रको उत्तर दिया है । इस नाटकमें पात्रोंकी संख्या एक दर्जनसेभी अधिक है । नाटक कुल तीन अंकोंमें विभाजित किया गया है ।

नाटकका शीर्षक यद्यापि इसमे चित्रित समस्याओंके अनुरूप नही है । किंतु इसका महत्व व्यक्तिपरक है । विश्वकांत ही सन्यासी है जो अपने प्रेमसे ऊपर उठने के लिये और उसे सामाजिक अहम् का रूप देने के लिये सन्यासी का रूप ग्रहण करता है । यह मानवकी चेतना का विजय है जो अध्यात्मिक अर्थोंमे भौतिक उपकरणोंपर भारतीय संस्कृतीकी विजय का प्रतिक है ।

(२) राक्षसका मंदिर (१९३१)

राक्षसका मंदिर मिश्रका दूसरा समस्या नाटक है । जिसकी रचना १९३१ में हुई थी । नाटकमें पुरुषा और स्त्री पात्रोंकी लंबी सूची है और प्रमुख पात्रोंके साथ कई सहायक पात्र भी रखे गये है । नाटक तीन अंकोमे विभाजित है । और इसमे कही कहीं गीतो का भी प्रयोग किया गया है ।

राक्षसका मंदिर शीर्षक का नाटक के कथानक के अनुरूप है । जिस प्रकार राक्षसी वृत्तियों से संपन्न एक मानव मंदिरकी स्थापना का आडंबर रच कर समाजकी कैसे स्वीकृती प्राप्त करनेका प्रयास करता है । इसका चित्रण किया गया है। इसमें समाजके आडंबर और सामाजिक संस्थाओंका परिहास

.. १७

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

स्पष्ट रूपसे परिलक्षित होता है । मुनीश्वर ही राक्षस है जो रामलाल रूपी देवताके धनसे एक ऐसे मातृ-मंदिरकी स्थापना करता है जिसमें नारियोंकी प्रतिरक्षाके माध्यमसे वह अपनी हिंसात्मक वासना और वासनात्मक हिंसा कीतृप्ती करना चाहता है । समाजके खोखलेपनकी ओर उसकी व्यवस्था के यथार्थ को मिश्रजीने इस नाटकमें विवृत्त कर दिया है ।

(३) मुक्तिका रहस्य (१९३२)

मुक्तिका रहस्य - मिश्रका तिसरा समस्या नाटक है । जिसकी रचना १९२२ में की गई थी । इस नाटकके पूर्वमें नाटक कारने मैं बुद्धिवादी क्यों हूँ और उन्नीस वर्ष बाद दो भूमिकाओंमें अपने विचारोंकी अभिव्यक्त किया है । नाटक तीन अंकोमें विभाजित है । इसकी पात्र संख्या उनके दो पूर्व समस्या नाटकोंकी अपेक्षा कम है। इसमें एकमात्र स्त्रीपात्र आशादेवी के अतिरिक्त अन्य सभीपात्र पुरुष है ।

नाटक नाटक के अनुरूप है जिसने उमाशंकर अपने चरित्र की महानताके आशा और डॉ. त्रिभुवन नाथ के संबंधोंको स्वीकार कर उन दोनोंको जीवन के सामाजिक उपभोग के आनंदको प्राप्त करने के हेतु मुक्त कर देता है और स्वयं भी मुक्त हो जाता है । इस प्रकार मुक्तिका रहस्य नाटक की समस्या पश्चिम के भौतिक वादी क्रमसे प्रारंभ होकर भारतके अध्यात्मिक त्यागमें पर्यवासित हो जाती है । भोग वादही बंधन है और उससे उपर उठकर त्याग ही मुक्ति ।

(४) सिंदूरकी होली (१९३४)

सिंदूरकी होली - मिश्रजीका चौथा समस्या नाटक है । जिसकी रचना

.. १८

- १८ -

१९३४ में हुई थी । इस नाटक में भी उनके अन्य नाटकोंके समान तीन अंक है अथवा बाकी है । इसके पात्रोंकी संख्या लगभग एक दर्जन है । यह नाटक मिश्र के समस्या नाटकोंकी एक नविन कलात्मक उपलब्धि ही मानी जाती है । नाटक के पूर्व नाटककारका कोई प्राक्कथा नहीं है ।

नाटक का शीर्षक इसके कथानकी ही अभिव्यक्ति है । सिंदूरकी होली का प्रत्यक्ष संबंध चंद्रकला के रजनीकांतसे वैयक्तिक संबंध से है जो वह वो मनोजशंकरसे विमुख होकर इस सामाजिक सत्य के उपरांत भी कि रजनीकांत विवाहित है अपनी आत्माका संपूर्ण वैयक्तिक समर्पण उसके लिये करती है और युवावस्थामें बिना यौवनका संसर्ग प्राप्त किये अविवाहित रहते हुए भी विधवा हो जाती है । मनोरमा का वैधव्य विवाहोपरांत का वैधव्य है जिस पर समाजकी स्वीकृति है किंतु चंद्रकला का वैधव्य समाजके परिप्रेक्ष्यमें एक अविवाहिता का है सिंदूर की होली शीर्षक उपयुक्त है । क्योंकी नाटक का पर्यावसान भी सिंदूर की होली में ही होता ह है ।

(९) राजयोग (१९३४)

राजयोग मिश्र का पाँचवा समस्या नाटक है । जिसकी रचना १९३४ मे हुई थी । इसमें चार पुरुषपात्र व एक स्त्री पात्र है । यह तीन अंकोंमें विभाजित किया है । मिश्रकी अन्य समस्या नाटकोंकी पृष्ठभूमि में पारिवारिक और सामाजिक पात्र है । किंतु राजयोग मे उन्हे एक राजसी रूप प्रदान किया गया है । लेकिन इसमे निहित समस्या राजकीय न होकर प्रेमकी ही समस्या है । जिसका संबंध सामाजिक लांछन और चिरंतन नारीत्वसे ह है ।

इस नाटकमें नरेंद्र ने समस्या का समाधान करने के लिये ही " राजयोग"

.. १९

धारण किया और राजयोगी के रूपमें ही वह प्रेम की समस्या के समाधान के उपरांत राजयोग से सन्यास ले लेता है । वह स्पष्ट शब्दोंने इस बातको स्वीकार करता है कि उसके इन सब समस्यों को सुलझाने के लिये ही यह रूप ग्रहण किया । "राज योग" शीर्षक इस अर्थमें उपयुक्त है कि उसमें राजघरानेसे संबंधित कथानक है और नरेंद्रका योग वास्तवमें राज्य का योगक है । जो दिवान का पद परित्याग कर सर्वदा के लिये कर्मयोग की ओर मुड़ जाता है । इसमें स्पष्टत: कुछ आ संस्कृति से हटकर सर्वहारा की एक प्रेरणा का संकेतन है, फिरभी राजयोग शीर्षक का चिंतन मूलधारासे कोई संबंध नही है जो इस नाटक की मूल प्रेरणा है । सब कुछ होते हुए भी "राजयोग" शीर्षक उपयुक्त ही कहा जाना चाहिये । क्योंकि इसका मेल नाटक की मूल प्रेरणा से न होकर उसकी मूल प्रेरणा के केंद्र से अवश्य है ।

(६) आधीरात (१९३४)

आधीरात मिश्रका छटा समस्या नाटक है । जिसकी रचना १९३४ में की गई थी । यह तीन अंकोमें विभाजित है और इस नाटक के पात्रोंकी संख्या उनके सभी समस्या नाटकों की संख्यासे न्यूनतम है । इसमें तीन पुरुष और एक स्त्री पात्र है । इसके अतिरिक्त एक पात्र का संकेत मात्र दिया गया है । इस नाटक के पूर्वमें लेखकने कोई वक्तव्य हीं दिया है ।

आधीरात प्रतिकात्मक अर्थमें दो बातें कहता है । प्रथम तो आधीरात मानवकी वासना के उद्दाम प्रवेश की प्रतिक है क्योंकि आधी रात में ही जीवनका अंधेरा पूरा प्रकाशित होता है । दूसरे इसकी सभी घटनाएँ आधीरात के समयकी है जिससे नाटक वातावरण प्रधान हो गया है क्योंकि इसमें जिस ग्रंथि की रचना

.. २०

नाटककारने की है, उसमें प्रेम को और काव्य की कल्पना को विशेष महत्व दिया है, जो दो भावनाओंके उद्दीपक है - भय और प्रेम । अतएव, नाटक का शीर्षक "आधीरात" कथावस्तुके अनुरूप न होते हुये भी उसकी आत्माके अनुरूप है । आधीरात नाटक में जिस भावना का प्रकाशन हुआ है उसमें व्यक्तिपरकता का (?)प्राधान्य है ।

मिश्रजी के समस्या नाटकोंके पात्र :

(अ) (१) सन्यासी (१९२९)

१) विश्वकांत

२) रमाशंकर

३) मुरलीधर

४) दीनानाथ

५) मालती - नारीपात्र

६) किरणमयी - नारीपात्र

(२) राक्षसका मंदिर (१९३२)

१) रामलाल

२) रघुनाथ

३) मुनीश्वर

४) अश्गरी - नारीपात्र

५) दुर्गा - नारीपात्र

६) ललिता - नारीपात्र

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR
एम. फिल.

(३) <u>मुक्ति का रहस्य (१९३२)</u>

१) उमाशंकर

२) डॉ. त्रिभुवननाथ

३) काशिनाथ

४) बेनीमाधव

५) आशादेवी - नारीपात्र

(४) <u>सिंदूर की होली</u> (१९३४)

१) मनोजशंकर

२) मुरारीलाल

३) मनोरमा - नारीपात्र

४) चंद्रकला - नारीपात्र

(५) <u>राजयोग</u> (१९३४)

१) नरेंद्र

२) शत्रुसूदन

३) रघुवंश

४) गजराज

५) चंपा - नारीपात्र

(६) <u>आधी रात (१९३७)</u>

१) रघुशरण

२) राधाचरण

३) प्रकाशचंद्र

४) मायावती - नारीपात्र

(ब) <u>समस्या नाटकोंके नारीपात्र</u> :

(१) सन्यासी (१९२९) : १) मालती

२) किरणमयी

.. कुल दो

(२) राक्षसका मंदिर (१९३१) : १) अशरी

२) दुर्गी

३) ललिता

.. कुल तीन

(३) मुक्तिका रहस्य (१९३२) : १) आशा देवी

.. कुल एक

(४) सिंदूरकी होली (१९३४) : १) मनोरमा

२) चंद्रकला

.. कुल दो

(५) राजयोग (१९३४) : १) चंपा

.. कुल एक

(६) आधीरात (१९३७) : १) मायावती

.. कुल एक

-०-

(५) **विश्व समस्या नाटकोंके पात्रोंका सामान्य परिचय:**

(अ) **मृत्युंजयी**

पात्र : १) विश्व कांत
२) रमाशंकर
३) मुरलीधर
४) दीनानाथ
५) मालती
६) किरणमई

(१) **विश्वकांत :**

नाटकका सर्व प्रमुख पात्र है । वह हाडमासका एक युवक है, जिसके हृदयमें उदात्त भावनाओंके साथ भावुकता भी प्रचुर मात्रामें विद्यमान है । वह मालती सेप्रेम करता है । किंतु मानव कल्याण के लिये उससे अलग हट जाता है । वह अंध श्रध्दानाशक है । आशाएँ - इच्छाएँ उसके हृदयमें भी जगती है, जो उसे त्यागपथसे डगमगती रहती हैं । वह हमारे जीवनका ही एक पात्र है । जो कभी परिस्थितीयोंको अपने अनुरूप ढालता है और कभी उनके अनुरूप ढलने के लिये विवश होता है । वह दृढ होते होते कमजोर हो उठता है और कमजोर होते होते दृढ हो जाता है । एशियाई संघकी स्थापना के लिये वह कृत संकल्प होता है और उसका महामंत्री बनता है । उसमें बाधा और लेखन अद्भुत क्षमताओंका मिश्रण है । अपनी वाक्शक्तिसे वह विदेशोंमे अपनी धाक जमाता है । लेखन शक्तिसे कविता और लेख विधाओंमे प्रसिध्दी पाता है । मानव - सुलभ उसमें सहज अस्थिरता है। इसिलिये एक ओर वह घर-बार और देश का परित्याग कर अफगानिस्तान जाता है और एशीयाई संघकी स्थापना कर उसका महामंत्री बनता है । किंतु मुरलीधर की मृत्युकी सूचना

और मालतीका पत्र पाकर इतना उद्विग्न हो उठता है कि महामंत्रीका पद छोडकर भारत वापस जाने के लिये कटिबद्ध हो जाता है । चिरकांत के चरित्रमें हृदय और मस्तिष्क की खुली - घुली स्थिती है । उसके व्यवहारसे कभी हृदय पक्षकी ध्वनी आती है, तो कभी मस्तिष्क की पुकार सुनाई पडती है । नारीके लिये उसने मानवीय दृष्टिकोन अपनाया है । वह मालती के लिये प्रेरणास्त्रोत बना है । तो मालती उसके लिये। अंतमे मालतीकी प्रेरणासे वह बंधमुक्त सन्यासी होता है । और प्रेमभाव को तिलांजली दे कर्तव्य के लिये पूर्णत: समर्पित हो जाता है ।

(२) रमाशंकर :

कॉलेजका प्राध्यापक है, जिसमें नारीके प्रति सहज आकर्षण है, नारी उसकी एक कमजोरी है । नारी सौंदर्य उसे इतना मोहित करता है कि वह सामाजिकता और नैतिकता को एक किनारे रख अपनी छात्रा मालती से स्पष्ट प्रेम निवेदन करता है। किंतु पाता है कि उसके मनमें चिरकान्त रचा-बसा है । वह ईर्षाग्रस्त हो उठता है । और चिरकान्तके विनाश के लिये तत्पर होता है । उसे अपमानित करता है उसे दो साल के लिये "रेस्टिकेट" करवाता है । नैतिक पतन की यह स्थिती है कि, वह अपने एक छात्र को अपना हमराज बनाता है । और उसीके द्वारा अन्य अमानवीय कार्य संपादित कराता है । मालती और चिरकांत को कुछ काल के लिये पृथक् करनेमें कृतकार्य भी होता है । उसका चरित्र एक अति सामान्य कोटिका चरित्र है, जिसकी अपेक्षा ऐसे प्रतिष्ठित पदप्राप्त व्यक्ति से नहीं की जा सकती ।

(३) मुरलीधर :

लोकसेवा और राष्ट्रहित के लिये पूर्णत: समर्पित एक चरित्र है । उसके हृदयमें किरणमयी के लिये प्यार है जिसका यदा कदा प्रदर्शन भी होता है । किंतु

.. २५

राष्ट्रप्रेम और जनसेवा उसका संयमन कर देती है । उसमें विवेक और कुछ दूरदर्शिता है । सद् असद् निर्णायक बुध्दि संयमन कर देती है । उसमें विवेक और दूरदर्शिता है । सद् असद् निर्णायक बुध्दि और उत्सर्ग की उत्कृष्ट भावना जिसकी परिणिती जेलमें उसकी असामयिक मृत्युमें ही होती है । वह एक आदर्श पुरुषका पात्र है ।

(४) दीनानाथ :

एक अत्यंत कामुक चरित्र है । वह कालेजमें प्रोफसेर है प्रौढावस्थामें अल्प आयुकी किरणमयीसे विवाह करता है और अहर्निश कामवासना का शिकार रहता है । वह शंकालु भी । और कभी कभी सौम्य भी । उसे किरणमयीके शरीर से लगाव है, उसके हृदयसे नहीं । उसे दब किरणमयी और मुरलीधर के साथ एक दूसरेसे असंपृक्त रहनेका एक समझौता करता है, किंतु अंत तक कमजोरियोंसे परिचालित होता रहता है । उसके चरित्र को एक असंयमी चरित्र की संज्ञा दी जा सकती है ।

(५) मालती :

मालती का चरित्र एक सच्चा भारतीय नायीका चरित्र है, जिसमें सुसंस्कारियोंसे लगाव, उसमें पुरुषोंके गुणोंकेप्रति आकर्षण, सहज प्रेम भावना, त्याग और अपने प्रेमीके लिये कल्याण भाव है । इसिलिये वह रमाशंकर से विवाह करती है । और अपने प्रेमि विश्वकांत को कर्तव्य पथपर आरुढ कर मानवताके लिये अपने स्वार्थ को बलिदान कर देती है । उसमें नारी सुलभ सभी कमजोरियाँ और अच्छाईयाँ है और धनी परिवारमें प्राप्य कुछ सीमातक स्वाच्छंदता और दुस्साह भी उसमें सामाजिकता के प्रति आसक्ति भी है और विरक्ति भी । पुरातन और

अनुमातन मान्यताओं की महात्मक मनस्थितियोंकी एक सजक साकार प्रतिमा है ।
इसमें आजकी भारतीय नारीकी झाकी देखी जा सकती है ।

(६) किरणमयी:

किरणमयी का चरित्र मालती की अपेक्षा कही अधिक प्रभावशाली है । उसे कलासे रुची है । हृदयको वह शरीरसे अधिक महत्व देती है । मुरलीधर उसका प्रेमी है जो उसके हृत्फलकपर समासीन है । वह अपना शरीर कुछ घंटोकेलिये अपने पतिको सहुपी देनेके लिये तयार है । हर समय शरीरका नाटक उसे पसंद नही । वह व्यवहार - कुशल है । वह समझती है कि, दिनानाथ एक ऐसा आश्रय ही जिसके रहते समाज उसकी ओर उंगली नहीं उठा सकता । वह उससे समझौता कर करती है और स्वच्छंद व्यवहार की अनुमती पा लेती है । अपने प्रेमीसे यदा कदा मिलती है । और उसकी मृत्युके समय वह उसके पास होती है । अपने प्रेमीका सामीप्य अनुभव करते हुए जीवनपथपर अग्रेसर हो जाती है ।

-०००-

(ब) राक्षसका मंदिर

पात्र : (१) रामलाल
(२) रघुनाथ
(३) मुनिश्वर
(४) कु अश्गरी
(५) दुर्गा
(६) कु ललिता

(१) रामलाल :

रामलाल सार्वजनवादी युग का प्रतिनिधी चरित्र है । जिसके चरित्रकी प्रमुख

.. २७

- २७ -

विशेषताएँ है - मद, मदिरा और विलासिता । वह वेश्या अगरीको रखैल बनाकर अपने पत्नीसे संबंध विच्छेद कर लेता है । मुनीश्वर का अगरी केसाथ वात्सल्यात्मक संबंध देखते हुए भी उसको नजर अंदाज कर देता, तथाकथित क्रांतीकारी मुनीश्वर को सी.आई.डी. पुलिसके घेरेसे बचाना और अंतमें पुत्रको दर दर का भिखारी बनाकर सारी संपत्ती अगरी के नाम पर मुनीश्वर को सौंप देना, उसके चरित्र की विशेषता है । इससे पहले वह अगरी को भी छोड देता है, और सांसारिकता और संसारसे नाता तोड लेता है । इस प्रकार उसके चरित्र में सामंती गुणावगुण विद्यमान है ।

(२) रघुनाथ :

यह एक अंतर्मुखी व्यक्तित्व चरित्र है जो अपने, अधिकारों और कर्तव्यों के द्वंद्वमें ग्रस्त रहता है और यह ... उसके व्यवहार को भी प्रभावित करता है। वह साहित्य प्रेमी है, साहित्यकारभी । अगरी उससे देह संबंध स्थापित करना चाहती है किंतु वह विचलित नहीं होता उसे संस्कारो और संबंधों से मोह है । वह ललिता के प्रति आकर्षित होता है । वह किंतु संकोची स्वभाव के कारण प्रेम कर नहीं पाता । ललिता उसे बांधना चाहती है । पर वह बाँह छुडाकर चला जाता है । बादमें अगरी के प्रति भी उसकी भावनाएं परिवर्तित होती हैं किंतु वह तब भी सफल नहीं हो पाता । यह जानते हुए भी कि,मुनीश्वर ने छल से उसकी संपत्ती हडप ली है । चाहते हुए भी प्रतिकार नहीं कर पाता । अपनी असमता की ओरमें महमहानता का प्रदर्शन करता है और मुनीश्वर को क्षमा कर देता है । इस प्रकार रघुनाथ का चरित्र अनेक संवेदनाओ संभावनाओं अभिरुचियों और कर्तव्य - पलायनों का भंडार है, जो सामान्येतर बनकर उभरा है ।

(३) मुनीश्वर :

आजके युवा प्रतिनिधी चरित्र है । जिसकी विशेषताएं है - अवसरवादिता

.. २८

येन केन प्रकारेण स्वार्थ साधन छलकपट धोखाधडी, व्युत्पन्न मतित्व विलासिता, अकारण पत्नी त्याग एवं मित्रको भी धोखा देता । अपने मित्र रामलाल को विरुद्ध बनानेकी स्थितियाँ उत्पन्न करता है। और अंततोगत्वा अनगरी के बहाने उसकी संपत्तीका मालीक बन बैठता है । समाज-सेवाके नामपर असहाय नारियोंका शोषण करता है । उसकी अशक्तताका लाभ उठाता है, और समाजमें प्रतिष्ठा पाने में सफल हो जाता है । वह अनगरी रघुनाथ और रामलाल के विनाश का कारण बनाता है किंतु अंतमे पाँसा पलट जाता है जिस वास्ते उसने रामलाल की संपत्ती अनगरी के अधिकार में आ जाती है इस प्रकार उसका चरित्र आधुनिक परिवेश के सर्वथा अनुकुल है औरउसका प्रतिनिधित्व करता है ।

(१) अनगरी :

अनगरी एक वेश्या है । जो रामलाल द्वारा रखेल बना दिजाती है । उसे पत्नीके सभी अधिकार प्राप्त है । केवल शारीर सुख उसे नही मिल पाता । वेश्या जन्य प्रवृत्ती और प्रकृतिके अनुरुप कभी वह रामलाल से शारीर सुख की कामना करती है तो कभी मुनीश्वर से और जब उसे और कोई नही मिलता तो रामलाल के पुत्र दीनानाथ से ही इसकी माँग करने लगती है । किंतु रघुनाथ से अपेक्षा मिलनेपर उसे बदनाम करती है । और उसे घरसे निकाल देती है । कालांतर में रामलाल उसे छोड देता है तब वह एक विद्यालयमें अध्यापिका हो जाती है और मुस्लिम महिला होते हुए भी मूर्ति पूजा करने लगती है । अनगरी की प्रणय-कामना अस्वीकार करते रघुनाथ को पछतावा होता है और वह परिमार्जन स्वरुप उसकी ओर आकृष्ट होता है किंतु अनगरी उस समयतक अपनी भावनाओं और आकांक्षाओ को वशमे कर चुकी होती है । अतः नम्रतासे प्रणय -प्रस्ताव ठुकरा देती है । मुनीश्वर की

.. २९

बालाजी का बदला लेने के लिये वह उसके द्वारा स्थापित और संचालित मातृमंदिर के उद्‌घाटन समारोह में संमिलित होती है तथा अपने उद्देश्यमें सफल होती है । इस प्रकार उसके चरित्र में नारी सुलभ गुणावगुणोंके साथ ही स्वाभिमान प्रतिकारकी भावना साहस, कर्तव्यनिष्ठा, और कुटिल-कुटिल की पर्याप्त मात्रामें विद्यमान है, नाटक का यह सर्व प्रमुख नारी पात्र है ।

(५) <u>दुर्गा</u> :

दुर्गा का चरित्र सम्पूर्ण एकनारी का चरित्र है जिसे केवल पति परमेश्वरके दर्शन की कामना है । मुनीश्वर उसे छोड देता है, अशरी वेश्या को अंकशायिनी बनाता है । दुर्गा मुनीश्वर को अशरी के साथ ऐसी स्थिती में देख लेती है जिसे कोई नारी सहन नही कर सकती किंतु दुर्गा तो मात्र एक देवी है । उसे इर्षा अथवा विषाद कुछ नहीं होता । वह तो मुनिश्वरके पैर धोने लगती है । और चरणोंदक पान करके उसके पैरोंपर सिर रखकर हर्षातिरेक में बेहोश हो जाती है । संज्ञा लौटनेपर क्षमा -याचना सहित दर्शन देते रहनेकी प्रार्थना करती हुई घर लौट जाती है । इस प्रकार दुर्गा अपने अभिधानके अनुरुप एक देवी ही है, दुर्गा सेभी ऊँची दुर्गासे भी महान ।

(६) <u>ललिता</u> :

ललिता का चरित्र एक अल्हड नव युवतीका चरित्र है । जिसमें उत्कंठा भावावेश, आशंका और दुस्साहस है । रघुनाथ के प्रति वह आकर्षित होती है साहसके साथ उसे अपने आवासीय स्थानपर ले जाती है । अतिथ्य करनेके पश्चात वह रघुनाथ को केवल रोकना चाहती है किंतु सफल नही हो पाती । उसमें सांप्रदायिक भावनाएँ है । और यह जानकर कि अशरी एक मुस्लिम युवती है वह उससे घृणा

.. १०

-३०-

करने लगता है, तथा आगरी के तथाकथित "मातृमंदिर" के लिये सबसे अधिक चंदा देती है और मातृ मंदिरके उद्घाटन के अवसर पर पहुँचती है । इस प्रकार उसके चरित्र में दूर-दृष्टी और उचित निश्चय की कमी है, जो उसके अक्खड चरित्र का विकादन करती है ।

(क) मुक्तिका रहस्य

पात्र : (१) उमाशंकर
(२) आशादेवी
(३) डॉ. त्रिभुवननाथ
(४) काशीनाथ
(५) वेनी माधव

(१) उमाशंकर :

एक मानवीय आदर्श चरित्र है । उसके मन मे गरिबोंके प्रति सहानुभूती की भावना है । वह न्याय का पक्ष लेता है । भारतकी स्वाधिनता का समर्थक है और स्वतंत्रता संग्राम में अपना सक्रिय योग देता है । अंग्रेजी शासनमें प्राप्त गौरव मय अधिकारी पद प्राप्त करने के बाद भी उसे ठुकराकर स्वातंत्र्य युध्दमें कूद पडता है । जेल यातना भोगता है । उसके हृदय में भी मानव जन्य सभी आकर्षण अपकर्षण है किंतु इन सभी स्थितीयोंमे उसका व्यवहार सदैव शालिन और सौजन्यपूर्ण रहता है । आशा की सेवा और त्याग भावना के प्रति वह कृतज्ञ है और उसके प्रति आकर्षित भी, किंतु शालिनतावश वह उसकी प्रशंसा तो करता है किंतु अपना प्रेम ज्ञापित नहीं करता । एक ही घरमें एक साथ रहते हुये भी अपनी भावनायें उदात्त बनाये रखनेमें समर्थ होता है । उसे यथार्थ से मोह है । और भावुकता से घृणा । उसने अपनी कथनी और करनी के अंतराल को बहुत अंशोतक

..३१

पाट दिया है । उसके व्यवहारमे जहाँ अपराध भावनाके प्रति तीव्र आक्रोश और प्रतिक्रिया जन्म लेती है । वही दूसरी ओर उसमें क्षमाशीलता भी प्रचुर मात्रामें उपलब्ध होती है । आशा द्वारा अपने और डॉक्टर त्रिभुवनकी हत्या के लिये रोक देता है । वह दोनोंके अपराधोंको क्षमा कर देता है । और अपने पुत्र मनोहरको प्यार करते हुए परिस्थिती के अनुसार अपने आपको व्यवस्थित कर लेता है । इस प्रकार उमाशंकरके चरित्र में हमें पाश्चात्य और पौर्वात्य तथा प्राचीन और अर्वाचीन प्रवृत्तीयोंका एक समन्वित मानवीय चरित्र प्राप्त होता है ।

(२) आशा देवी :

आशादेवीका चरित्र एक भारतीय नारी का विशिष्ट चरित्र है । जिसमें स्त्री सुलभ करुणा, दया, स्नेह, और त्याग भावना विद्यमान है । उसके हृदयमें वात्सल्यकी तरंगे भी तरंगायित हो छूटी है । उसमें भावी संसार के लिये कल्पनाएँ की है जिसमें उमाशंकर का व्यक्तित्व उभर उतरता है । वह उसके जीवनमें प्रवेश करती है । किंतु पाती है कि उसके हृदय और जीवनपर उसकी पत्नीका अधिकार है । अन्य कोई चारा न देखकर वह पत्नीकोजहर देकर हत्या कर देती है । किंतु उसके लक्ष्यकी प्राप्ती भी नहीं होती और उसके लिये एक बड़ा मूल्य, डॉक्टर त्रिभुवन को अपना शरीर देकर चुकाना पड़ता है । क्योंकि डॉक्टर त्रिभुवननाथ उसके जीवनका पहला पुरुष है, इसलिए वह उसके कुकृत्य को भी क्षमा करदेती है और उमाशंकरके सम्मुख अपना अपराध व्यक्त करने केबाद औरउससे क्षमा याचना कर स्वीकृति मिल जानेके बाद डॉक्टर त्रिभुवन कोही अपना जीवनसाथी चुन लेती है । भारतीय जन्मजन्मांतर अवधारणाके अनुरूप उमाशंकर को अगले जन्म में पति रूपमें पाने की कामना करती हुई उसके जीवनसे असंपृक्त हो,

- १२ -

त्रिभुवनकी जीवन संगिनी बन जाती है जो परिस्थितीयोंके अनुरुप अपनेआपने को ढालती है। और अब उनको अपनी नीयती स्वीकारती रहती है।

(३) डॉ. त्रिभुवननाथ -

एक ऐसे पुरुष का चरित्र है जो खाओ पिओ और मस्त रहो। धारणाका पोषक है। अतः वह विवाहित है। अतः स्वच्छंदता और स्वेच्छाचारिता उसके जीवनका लक्ष्य है, इसलिये वह सम्य समाजमें आचरण च्युति माना जाता है। उसे वे सब हथकंडे आते हैं जिनके माध्यमसे अपनी अभिलषित उद्देश की पूर्ति की जा सकती है। इसलिये वह आशा देवीकी कमजोरी का लाभ उठाकर उसके साथ संभोग करनेमें सफल होता है। कालांतर मे आशा की उमाशंकर के प्रति अत्यंत उदात्त भावनाएँ लक्ष्य कर वह स्वयं भी उमाशंकर जैसा बननेका प्रयत्न करता है। तदनुसार आशादेवी से क्षमा मांगता है। उसके द्वारा लिखित पत्र उसे वापिस कर देता है। और अपनी जीवन नौका आशा की कृपादृष्टिपर छोड देता है। डॉ. त्रिभुवन की परिवर्तित विचार धारा और समर्पण भावना का सम्यक - प्रभाव पडता है। आशा उसके अपराध को क्षमा ही नहीं करती बल्कि उसकी जीवनसंगिनी भी बन जाती है। डॉ. त्रिभुवन के चरित्र के माध्यमसे नाटककार ने संशोधनवादी विचार धारा की पुष्टि की है।

(४) काशीनाथ :

एक ऐसा पात्र जिसे अपनी रूढियाँ और परंपराएँ सर्वाधिक प्रिय है। वह लकीर का फकीर बने रहनेमें ही अपना और सबका कल्याण मानता है। सामाजिकता उसके व्यक्तित्व पर हीपुरी तरह अधारित है। वह सामाजिकता की रक्षा के लिये निकट संबंध का बलिदान करनेमें भी नहीं हिचकीचाता। उमाशंकरके

.. १३

साथ उसका व्यवहार इसी तर्कभूमिका द्योतक है । वह अंत तक अपनी इस विचार धारामें कोई परिवर्तन, परिवर्धन और संशोधन स्वीकार नहीं करता । इस प्रकार उसका चरित्र भारतीय समाजके एक ऐसे बडे वर्गका प्रतिनिधित्व करता है जो पूर्ण रूपसे परंपराओं और रूढियोंमें ही जीते है ।

(५) बेनी माधव :

एक ऐसा व्यक्तिमत्व है जिसमें मित्रता कम और मात्र दिखावा होती है । उसके जीवनका लक्ष्य मैत्री संबंधका निर्वाह नही बल्कि अवसरवादिता है । कहनेको वह उमाशंकरका मित्र है किंतु उसके लिये किये गये सभी कार्य मित्र के कल्याण के लिये न होकर अवसरवादिता के साक्ष्य ही सिध्द हुए हैं ।

(४) सिंदूर की होली

पात्र : (१) मनोरमा
(२) चंद्रकला
(३) मनोजशंकर
(४) मुरारीलाल

2493 A

(१) मनोरमा :

मनोरमा एक ऐसी बाल विधवा है। जो विधवा होते हुए भी वैधव्यके अभिशापोंसे मुक्त है । सारा समाज उसे विधवा स्वीकारता है और वह स्वयं भी किंतु मनमें रंच मात्र शोक नहिं है । अपनी शोकहीनता की स्थिती के लिये उसका यह तर्क है कि किसी वस्तुके विछोह का शोक तभी संभव हो सकता है जब कि वह वस्तु प्राप्त हुई हो। अप्राप्त वस्तु के लिये शोक कैसा ? उसकी यह धारणा वैज्ञानिक कसौटीपर खरी उतरती है जो उसकी आधुनिकता का द्योतक बनकर करती है । इसी धारणा वश वह मनोजशंकर के प्रति आकृष्ट होती है और अपना प्रेम प्रकट

.. ३२

करती है । वह उसे अपना प्रेमी ही स्वीकारती है, दूल्हा नहीं । उसका यह व्यवहार उसके चरित्र को एक अजिब अस्पष्टता भर देता है । यदी वह मनोजको पतिके रुपमें स्वीकार कर लेती है तो उसका चरित्र एक सहज मानवीय बन जाता । उसके पास तर्क, चेतना है किंतु शायद उसपर व्यवहार करने का साहस उसमें नहीं है । इसप्रकार उसका चरित्र उलझाव युक्त हो गया है ।

(२) चंद्रकला :

चंद्रकला कीशिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य वातावरणमें हुई है । उसके हृदय में रजनी कांत के प्रति स्वच्छंद प्रेम के बीज अंकुरित होते है । रजनीकान्त एक विवाहित नवयुवक है, अत: वह चंद्रकला के प्रेमका आभासपाते हुए भी उसके प्रति निरपेक्ष रहता है । चंद्रकला अपनी प्रेम भावनाओंपर नियंत्रण नहीं रख पाती। रजनीकांत से संबंधित दुर्घटना की वार्ता सुनकर और वह मरणासन्न है सुनकर, वह अपने भावावेश को दबा नही पाती और मृतप्राय: रजनीकांत के हाथसे अपने माथेपर सिंदूर लगवाती है । उसके इस व्यवहारको कोरी भावुकता की संज्ञा दी जा सकती है । साथही उसका यह व्यवहार ऐसा है जोभारतीय नारीके विशिष्ट चरित्र का उद्घाटन कर देता है । उसने जब रजनीकांत को पतिके रुपमें एक बार स्वीकार कर लिया तो वह उसीको आजीवन पति मानेगी, स्थिती कैसी भी क्यों न हो ।

(३) मनोजशंकर :

एक ऐसा पुरुषपात्र जिसके सिरपर सेपिता का साया बचपनसे ही उठ गया था, उठा दिया गया था । पिताका वात्सल्य,प्रेम के अभाव में उसके आचार-व्यवहार में अस्वाभाविकता हो जाना अनिवार्य था । उसे यह बताया गया है कि, उसके पिता ने आत्महत्या की थी किंतु आत्महत्या का कारण उसके लिये एक रहस्य

बना दिया गया । उसके चरित्रमें एक हीन ग्रंथि आ गई जिसने उसे अकर्मण्यता की स्थिती में ला खडा किया । उसमें अनासक्ति और विरक्ति पैदा हुई । उसने अपनी पढाई अधूरी छोडी । कालांतर में उसके अपने पिता की मृत्युका कारण भी ज्ञात हो गया किंतु हीन ग्रंथि के कारण पिताघाती मुरारीलाल के प्रति भी उसमें आक्रोश-पूर्ण व्यवहार और प्रतिकार की भावना न जग सकी । वह मात्र अकर्मण्य और पलायनवादी ही बन सका । इस प्रकार मनोजका चरित्र एक स्वाभाविक चरित्र न होकर अस्वाभाविक चरित्र बन गया ।

(४) <u>मुरारीलाल</u> :

मुरारीलालका चरित्र हमारे आजके भारतीय जीवनका और हमारे परिवेश का सही चित्र है । भौतिकतावादी दृष्टिकोण हमने अपना लिया है और नीतिके आदर्श के प्रति असहिष्णुता अपना लिई है । इस दृष्टिसे नैतिकता हमारे लिये बेईमानी हो गयी है । हमारी आवश्यकताएं बढ गई हैं और धनकी आवश्यकता है। साधन भी हमारे सीमित हैं । मुरारीलाल इसीलिये अनुचित साधनोंका आश्रय लेता है । और संपन्न बना रहता है । जैसा कि हमारा परिवेश है । आज हमलोग भौतिकता, अध्यात्म और मस्तिष्क या हृदयके द्वंद्वमें फंसे है । मस्तिष्क के प्रबल हो जानेपर वह मनोजके पिता की हत्या करता है, और हृदय क्रिया शील हो जानेपर मनोजका पुत्रवत पालन करता है । मनोरमा जैसी असहाय बाल विधवाको आश्रय देता है । मनोज के साथ अपनी लडकी चंद्रकलाका विवाहभी करना चाहता है । किंतु अंतमें वह इस द्वंद्वकी स्थितीका परिणाम भोगता है और सभी ओरसे निराशा मिला लेता है । इस प्रकार मुरारीलालका चरित्र आजके [redacted] भारतीय जीवनका एक सामान्य अवसरवादी चरित्र है ।

.. ३६

(ड) पात्र योजना

पात्र : (१) नरेंद्र

(२) शत्रुसूदन

(३) रघुवंश

(४) गजराज

(५) चम्पा

(१) नरेंद्र :

दीवान रघुवंशसिंहका पुत्र है। चंपाके साथ उसका विवाह होने जा रहा था कि रियासतके युवराज राजकुमार शत्रुसूदन की दृष्टि चंपाके उपर पडी और अपेर चंपा की भावनाओंका अनुभव किये, उसके साथ विवाह कर लिया। नरेंद्र दु:खी हुआ और अज्ञात वासमें चला गया। उसने योग साधना की। अब तत्पश्चात अपने तपस्वी रुपमें रियासत मे लौटा। अपनी साधानाके माध्यमसे उसने शत्रुसूदन को प्रभावित किया। गजराजकी अंतव्यथा का उद्घाटन किया। चंपाके सामने होनेपर भी अपनी भावनाएँ प्रछन्न रखी। तदनंतर उसने चंपा और शत्रुसूदनका मनमुटाव दूर किया। इस प्रकार नरेंद्र का चरित्र एक सच्चा प्रेमीका चरित्र है। जो अपनी प्रेमिका के कल्याण के लिये न सिर्फ प्रेमिका और पतिके बीचसे हट जाता है। बल्कि उसका मनोमालिन्य भी दूर करता है। वह शिक्षित है, योग्य है बुध्दिमान है और सहनशील भी। प्यार उसके लिये एक पवित्र वस्तु है, जिसकेलिये वह अविवाहित रहकर त्याग अपने त्याग और प्रेमिका के कल्याणका परिचय देता है। वह अशांतिको शांतिमें परिणत कर देता है।

(२) शत्रुसूदन :

सामंतीवादी युगका एक चरित्र है। वह तर्क को व्यवहार से अधिक उचित

समझाता है । उसके कार्यकलाप, स्वेच्छा चारिता और स्वच्छंदता का परिचय देते है । वाग्दत्ता चंपाके साथ बलात् विवाह करता, अनुभवी और कुशल दीवान रघुवंश को केवल आयुके आधारपर दिवानीसे मुक्त करना वंश परंपरा और जातीवादपर दृढ रहना, आदि उसके ऐसे कार्य है, जो विशिष्ट सामंतवादी परंपराके द्योतक है । उसे अच्छे-बुरे, ऊँच नीचका विचार नहीं है केवल युवराज होनेके कारणही वह अपने को सबसे महान, सबसे विद्वान समझाता है । उसे अपनी प्रजाका ध्यान नही, मनुष्योंकी पहचान नही और चंपाका हृदय जीतनेकी कला नही । इस प्रकार उसका चरित्र एक सामान्य चरित्र है ।

(३) रघुवंश :

एक स्वामिभक्त दिवान है। वह अपने राजाके अच्छे - बुरे सभी व्यवहारपर मौन स्वीकृति देता है । वह जानते हुए कि उसके पुत्र नरेंद्र के पलायन के लिये शत्रुदन हीजिम्मेदार है । वह उससे कुछ नहीं कहता । शत्रुदन उसे दीवानके पद से हटने के लिये कहते है तो वे चुपचाप पद छोडकर चले जाते है । वे एक बहादुर स्वामिभक्त दीवान है । वे अपने कार्यमें दक्ष है । किंतु उन्होंने अपनी इच्छाएं आकांक्षायें राज-कार्य के लिये न्योछावर कर दी हैं । सामंतवादी युगके प्रमन्थ एक आदर्श चरित्र है ।

(४) गुलराज :

एक सीधा सच्चा भृत्य है । उसकी आत्मा बडी विशाल और शक्तिशाली है । उसने जो अपराध अर्थात् रानी के साथ संभोग किया था उसके पश्चात्तापमें अपराध भावनासे आजीवन पीडित रहता है। किंतु राजवंश को कलंकित नहीं करता आजीवन पर्यन्त वह यह रहस्य अपने में छिपाए रखता है । चंपा उसकी हीपुत्री है

.. ३८

जिसका जन्म रानीकी कोखसे हुआ है। पिता होते हुए भी यह रहस्य संघासे भी नहीं बताता। वह मानसिक संघर्षा भोगता है अंतमें नरेंद्रद्वारा रहस्य प्रकट कर दिए जानेपर अप्रसन्न हो जाता है। किंतु उसका भार हल्का हो जाता है। इस प्रकार वह एक सत्वारित्र पात्र है।

(५) संघा :

भारतीय नारीका एक अनूठा चरित्र है वह नरेंद्र को अपना हृदय दे चुकी है। उसकी वाग्दत्ता भी हो चुकी है किंतु युवराज राजकुमार शत्रुदन की दृष्टि की वह शिकार बन जाती है और उसे हृदयपर पत्थर रखकर शत्रुदन से शादी करनी पडती है। भारतीय नारीकी तरह वह पतिको सर्वस्व अर्पण कर देती है। पतिकी आज्ञाका पालन करती है। उसकी सेवा शुश्रुषा करती है। किंतु हृदयपर उसका वश नहीं है। उसके हृदयपर नरेंद्रका निवास है। कालांतर में स्वयं नरेंद्र ही राजयोगी के रूपमें आता है और पति-पत्नीका मनोमालिन्य दूर कर उन्हे सौमनस्य कर देता है। इस प्रकार भारतीय नारीका एक प्रतिनिधी नारी चरित्र है।

(ई) आधीरात

पात्र: (१) राधाचरण

(२) राधाचरण

(३) प्रकाश चंद्र

(४) मायावती

(१) राधाचरण :

एक विदेशी शिक्षा प्राप्त और विदेशी रंग मे रंगा चरित्र है। विलायतसे अपने मित्र राधाचरण के साथ वापस भारत आता है। राधाचरण

.. ३९

- ३९ -

के साथ मायाका विवाह होना और दोनों मित्रोंमें मायाको लेकर वैमनस्य, कटुता, आक्रोश, संघर्ष और अंतमें राघवशरण की प्राणाहुती राधाचरणकी गोलीसे होती है। जिस पेड़के नीचे यह गोली कांड हुआ उसी पेड़पर प्रेत काया प्राप्त हुई। ईश्वर राधाचरण को काले पानीकी सजा हुई और उधर एकाकी जीवनसे ऊबकर माया प्रकाशचंद्र के साथ विवाह करती है। प्रकाश के साथ उसी घरमें रहती है। राघवशरण की प्रेतात्मा प्रकाशचंद्रसे बदला लेती रहती है। और उसे हर प्रकारसे पीड़ित करती रहती है। प्रेतात्मा कदा-कदा मायासे भी मिलती रहती है। माया और कोई विरक्ति नहीं दिखाती। प्रेतात्मा प्रकाशचंद्र को मायासे अलग होने के लिये उत्कामी रहती है। इसलिये वह मायाका कच्चा चिठ्ठा उसके सामने खोलती है। और उसे अपना [illegible]कार्य बंद कर देनेकी राय देती है। उसे व्यष्टिपरकताकी ओरसे विरक्त कर समष्टिपरकता कीओर उन्मुख करती है। अंततः वह प्रकाश और मायाको अलग करनेमें कृतकार्य होती है। प्रेतात्मा का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जो सज्जनता का लिबास पहने हुए है किंतु अनिष्टकारी सिध्द होता है।

[illegible]

३१) राधाचरण :

यह भी उच्चदेशी शिक्षा और सभ्यता में निष्णात है। किंतु अपने मित्र राघवशरण को अपनी पत्नीसे संयुक्त देखकर गोली मारकर उसकी हत्या कर देता है। काले पानीकी सजा काटकर वह वापस लौटता है। तब वह देखता है कि राघवशरण (प्रेतात्मा) ऐसे व्यक्ति (प्रकाशचंद्र) को पीड़ित कर रहा है। जिसका कोई अपराध नहीं है। [illegible] वह राघवशरण से भी बात करता है क्योंकि उसे तंत्र विद्याका ज्ञान है। और उसे ऐसा न करनेकी सलाह देता है।

.. ४०

- ३० -

राधचारण कहता है कि प्रकाशचंद्र यहाँसे चला जाये तो वह प्रकाशचंद्र को परेशान नहीं करेगा । राधाचरण प्रकाशचंद्रके पास जाता है और उसे प्रेमाबाधा से मुक्त करता है । इस बीच आधीरात बीत जाती है । सबेरा हो जाता है । और पता चलता है कि माया नदीमें डूबकर मर गई है । इस प्रकार राधाचरण का चरित्र एक भारतीय चरित्र है जिस पर विदेशी शिक्षा और [redacted] संस्कृती का कोई प्रभाव नहीं पडता । वह पत्नी का संपर्क किसी अन्य व्यक्तिसे चाहे वह उसका अभिन्न मित्रही क्यों न हो, सहन नहीं कर पाता । वह अन्याय का विरोधभी करता है । और प्रकाशचंद्र को प्रेत बाधासे मुक्त करता है । वह राधचारण (प्रेतात्मा)को भी धिक्कारता है ।

(३) प्रकाशचंद्र :

एक विलक्षण चरित्रका धनी है । वह साहित्यकार है । सुंदर, संवेदनशील । किंतु नाटककार ने उसके चरित्र में पौरुषकी कमी प्रदर्शित की है । वह मायासे अलौकिक प्रेम करता है । लौकिक नहीं । पांच वर्षोंके साथ रहता हुआ भी एक दिन के लिये भी उससे शारीरिक संबंध स्थापित नहीं करता । इसप्रकार उसका चरित्र एक अजूब चक्कर रह गया है । साहित्यमें और भी वह व्यक्तिनिष्ठ साहित्यमें इतना दत्तचित्त रहता है कि उसे दीन-दुनिया की कोई खबर नहीं रहती ।

(४) मायावती :

वह एक है ऐसी नारी चरित्र है जो प्रारंभमें विदेशी प्रभावसे अभिभूत है । वह पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता के प्रभावमें भारतीय संस्कृति और यहाँ की सभ्यता से घृणा करती है । वह अनेक प्रेमी भी दो [redacted] बनाती है । और शारीरिक सुख भोगती है । किंतु उसकी आत्मा को शांती नहीं मिलती .. ३१

इसी बीच राधाचरण अपने मित्र और मायाके प्रेमी राधाशरण की हत्या कर देता है । राधाचरण को काले पानी की सजा हो जाती है । फिर काकी चोंचलोंसे वह ऊब जाती है । साथही उसे भारतीय संस्कृति भी रास आने लगती है । वह प्रकाशचंद्र से विवाह करती है । किंतु शारिरिक संबंधसे उसे घृणा हो जाती है । वह प्रकाशचंद्र का साथ चाहती है । उसकी सेवा शुश्रूषा करती है । और भारतीय नारी की भाँती पति-सुखके लिये सभी व्रत उपवास रखती है । इस प्रकार मायावती का चरित्र एक दृढ चरित्र नहीं है बल्कि परिवर्तनशील चरित्र है । उसमें माया-ममता है किंतु साथ ही उसमें क्रूरता और कठोरता भी । वह प्रेतात्मा का साथ भी करती है । और प्रकाशचंद्र की सेवा-शुश्रूषा भी । अंतमें डूबकरआत्महत्या करती है जो समस्याोंसे संघर्षो का मार्ग न होकर एक पलायन का मार्ग है । इस प्रकार माया का चरित्र एक अत्यंत साधारण नारी चरित्र है ।

-००-

(७) मिश्रके सांस्कृतिक नाटकोंका परिचय :

(१) अशोक : (१९२६)

मिश्रका पहला ऐतिहासिक सांस्कृति नाटक है । इसकी रचना सन १९२६ मे और प्रकाशन सन १९२७ मे हुआ । नाटक का नामकरण नायकके नामपर हुआ है । भारतीय इतिहासकी ख्यात कथाके आधारपर अशोक कालिन प्रमुख घटनाओंका वर्णन नाटक का आधार है पर घटनाओंका क्रमिक विस्तार नाटककारने अपने ढंगसे किया है । तत्कालिन ब्राह्मण-बौध्द संघर्षो को बहुत स्पष्ट रुपसे प्रस्तुत किया गया है । यह नाटक बौध्द कालसे महोदय-रोज की एक झलक है । जिस विश्व विश्रुत सम्राट अशोक वर्धन की पुण्य गाथाओंसे बाल्हीक से सुदूर दक्षिणापथ तक के प्रस्ता खंड आजभी अंकित मिलते है । उन्ही अशोक के महान मानसिक परिवर्तन का उन्मेषा इसमें दिखाया गया है । नाटक तीन अंकोमें विभाजित है । इसमें सामान्य गीत योजना है ।

(२) नारदकी वीणा (१९४६)

लक्ष्मी नारायण मिश्रका प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक नाटक है । इसका प्रकाशन सन १९४६ इ. मे. हुआ । इस नाटक के कथानक, इसकी प्रवृत्तियों और समस्याओंका नियोजन कुछ ऐसे ढंगसे हुआ है कि [illegible] प्राय: चार हजार वर्षोका प्रागैतिहासिक काल झलकने लगता है । इस नाटकमें मिश्रका दृष्टीकोण आर्य सभ्यता को हीन दिखलाना व और अनार्य सभ्यता की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करना रहा है । उन्होने बताया व है कि पश्चिम की ओरसे भारतमे आनेवाले वे श्वेत यायावर आर्योने शारिरिक शक्तिके बल पर यहाँ के मूल निवासियों पर विजय तो प्राप्त

.. ४२

कर ली किंतु सभ्यता और संस्कृति में वे अनार्य सभ्यतासे परिचित हो गये । उन्हें भी यहाँ के मूल निवासीयों और आर्योंकी सभ्यता व संस्कृतिका ही समन्वित रूप है । नाटक तीन अंकोंमें विभाजित है । इन अंकोंका दृश्योंमें विभाजन नहीं है । नाटक में कल्पना के आधिक्य के साथ ही प्रसंगवश पुराणोंसे आधार ग्रहण किया गया है ।

(१) <u>गरुडध्वज (१९४५)</u>

मिश्रजीके इस संस्कृति प्रधान ऐतिहासिक नाटकका प्रकाशन १९४५ में हुआ । भारतकी गौरव मंडित संस्कृति के निर्माता कालिदास और विक्रमादित्य का भी एवं शक्तिकी अभिव्यक्ति इस नाटकमें हुई है । गरुडध्वजमें जो वातावरण चित्रित है वह शुंग वंशकी स्थापनासे लेकर समाप्ति तक का उल्लेख है और साथ ही मालव साम्राज्य की प्रतिष्ठाका चित्रण है । भागवत धर्मका उत्कर्ष और बौध्द धर्मका उत्कर्ष और बौध्द धर्मका पतन बताने हुए नाटककारने सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय उत्कर्ष को व्यक्त किया है। गरुडध्वजमें भारतकी गौरवमयी प्राचीन संस्कृति, राष्ट्रीय उत्कर्ष औरएक सशक्त राष्ट्र के निर्माणका स्वर मुखरित हुआ है । नाटक आधुनिक यथार्थ वादी शैली पर लिखा गया है । इनमें तीन अंक है। अंकमें बीच दृश्य परिवर्तन का विधान नहीं है । गीत, एक भी नहीं है । नाटक का कथानक मात्र ऐतिहासिक है, उसका सृजन मिश्रजीकी अपनी कल्पना और चिंतन के सहारे हु आ है ।

(२) <u>वत्सराज (१९५०)</u>

इस प्रसिध्द संस्कृतिप्रधान ऐतिहासिक नाटककी रचना सन १९४९ में हुई । इसका प्रथम प्रकाशन सन १९५० में हुआ । इस नाटकमें रूप और कलाके धनी वत्सराज उदयन का चरित्र भासरचित, स्वप्न वासवदत्ता, प्रतिज्ञा -

.. ४४

- ४१ -

योगंधरायण और कथा सरित सागर के आधारपर चित्रित हुआ है । नाटकमें उदयन और तथागतके समय के वातावरण को उपस्थित करते हुये बुध्दकी संस्कृतिकी झलक भी दी गई है । उदयनकी कथा के माध्यमसे नाटककारने भारतीय संस्कृतिके आदर्श रूपको प्रस्तुत किया है । बुध्द नी सभ्यता और बौध्द धर्म की आलोचना करते हुए भारतीय जीवन दर्शन को उत्कृष्ट बताया गया है । वत्सराज के चरित्रमें तप और भोग का समन्वित रूप प्रस्तुत करते हुये [illegible] भारतीय संस्कृतिका उज्वल एवं आदर्श रूप उद्घाटित किया है। नाटकमें तीन अंक है । गीतोंका अभाव है । दृश्य घटनाओंकी अधिकता है । अन्य ऐतिहासिक नाटकोंकी तरह इसमें भी मिश्रजीने अपनी कल्पना के सहारे उदयनसंबंधी ऐतिहासिक मान्यताओंमें परिवर्तन किया है ।

(९) दशाश्वमेध (१९५०)

इस संस्कृती प्रधान ऐतिहासिक नाटकका प्रकाशन सन १९५० (सितंबर) में हुआ । इस नाटकमें भारशिव नागोंके वंशमें जन्म वीरसेन नामक नागिक साहसि एवं शौर्य की कहानी है । [illegible] १० [illegible] वीरसेन कुषाण-साम्राज्य को चुनौती देकर देश को स्वतंत्र करने का सफल स्वप्न देखता है। नाटक में दूसरी और तीसरी शताब्दी के कुषाण साम्राज्य के अंतिम दिनोंका वातावरण चित्रित किया गया है। यह वह समय था जब कुषाण साम्राज्य अपनी अवनति पर था और भारतके पूर्वी भागमें भारशिव नागोंका उदय हो रहा था। नाटकमें तत्कालिन, सामाजिक राजनैतिक और धार्मिक वातावरण को [illegible] रूपमें उभारा गया है । नाटक में तीन अंक है । प्रत्येक [illegible] अंकमें एक दृश्यांतर अर्थात् दो दृश्य है । प्रत्येक दृश्य में स्पष्ट रंग संकेत है । नाटकमें भरत

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

वाक्य, नांदी पाठ गीति योजना आदि नही है। नेपथ्य कथनोंका भी स्पष्ट रुप के अभाव परिलिक्षित होता है ।

(६) वितस्ता की लहरें (१९५३)

सांस्कृतिक ऐतिहासिक नाटकों की परंपरा मे लिखा यह नाटक १९५२ में प्रकाशित हुआ । इतिहास प्रसिध्द सीकंदर और पुरु के युध्द की पृष्ठभूमि पर इस नाटककी रचना हुई । नाटकका आधार वितस्ताके तटपर यवनसेना का पहुंचना, चोरीसे वितस्ता पार करना और वीर पुरुके साथ सिकंदरका युध्द है । नाटकके माध्यमसे भारतके प्राचीन आत्म गौरव पराक्रम और संस्कृतिका चित्रण है । नाटक कारने यवन संकृतिपर भारतीय संस्कृतीकी विजय दिखाते हुये तत्कालिन राजनैतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर्याप्त प्रकाश डाला है । सिकंदर और पुरुके इतिहास प्रसिध्द युध्द की स्थितीयों को नाटककारने अपने प्रतिभाशाली कल्पनाके सहारे परिवर्तित कर दिया है । आधुनिक शैली पर रचे गये इस नाटकमें तीन अंक है । अंकोंके बीच में कही भी दृश्य परिवर्तन नही हुआ हुआ है ।

(७) वैशालीमें बसंत (१९५५)

सांस्कृतिक ऐतिहासिक नाटकोंके क्रममें इस नाटकका प्रकाशन १९५५ में हुआ । भारतके प्राचीन गणराज्य वैशाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर नाटक-कारने अपनी कल्पना के सहारे नाटककी रचना की है । इसमें इतिहास प्रसिध्द वैशाली की नगर वधूका नया रुप (नगर माता) देखनेको मिलता है । नाटकमें अंबपाली - अजातशत्रु कालिन भारतकी राजनैतिक सामाजिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितयों का वर्णन मिलता है। अन्य नाटकोंकी तरह इसनाटकमें भी भारतीय संस्कृतिके उज्वल रुप के प्रस्तुतिकरण में नाटकमें नाटककारने बौध्द

- ४५ -

धर्म की आलोचना की है। साथही भारतीय संस्कृति की सर्वोत्कृष्टता सिद्ध करनेके लिये ब्राह्मणत्व कीप्रतिष्ठा भी की है। दासप्रथावर्जित संघकी, कार्यविधी गौतम बुध्द तथा उनके संघो के घातक प्रभाव आदि भी नाटकमें कम हुये हैं। नाटक की रचना तीन अंकोंमे हुई है। नाटक रचनामें भारतीय शैली की झलक विशेष रुपसे चरित्र-चित्रण व रसदृष्टीसे दिखाईदेती है। बौध्द धर्मका विरोध यत्र तत्र दिखाई पडता है। राष्ट्रीयता की भावना और जातीय गौरव को अभिव्यक्ति मिली है। घटनीका दृश्य, तीन अंकोमे विभाजित नहीं है। इन अंकोका दृश्यों में विभाजन नही है। गीति योजना का अभाव है रंगमंच की दृष्टी से पंद्रह पृष्ठों में लगातार देवकी के नेपथ्य कथनों के कारण अस्वाभाविक वातावरण निर्मित हुआ है।

(४) चक्रव्यूह - (१९५३)

मिश्रके इस सांस्कृतिक पौराणिक नाटकका प्रकाशन सन १९५३ मे हुआ। यह नाटक महाभारत के पौराणिक आख्यान का अंश मात्र है। द्रोणाचार्य ने पांडव पक्षके किसि वीर के निधन के लिये चक्रव्यूह का निर्माण किया और अभिमन्यु ने अपने पराक्रमसे उसका भेदन किया। नाटक का संक्षिप्त कथानक युध्द संबंधी मान्यताओंके साथ तत्कालिन संस्कृति की झलक भी दे सका है। मिश्र ने पौराणिक कथानक की सर्वथा रक्षा करते हुए अपनी कल्पना से उसे नविन मनोवैज्ञानिक रुप देने का प्रयास किया है। उन्होंने भारतकी घटना और पात्रोंकी आश्रय लिया है। किंतु उनको आधुनिकताके मेल से रखते हुए बुध्दि संगत मनोवैज्ञानिक रुप दे दिया है। नाटकके सभी प्रमुख और सहायक पात्र अपने पौराणिक महत्व में अमर है। "चक्रव्यूह" में तीन अंक है। प्रत्येक

.. ४७

अंकमे एक दृष्य परिवर्तन है । नाटक में पात्रोकी संख्या तेईस के आसपास पहुँच गयी है। नाटक की एकही अधिकारिक कथा है । नाटकमें चार गीतो को स्थान मिला है ।

(९) कविभारतेंदु (१९५५)

यह मिश्रका यह पहला संस्कृति प्रधान जीवनी नाटक है। जिसका प्रकाशन अक्तूबर १९५५ में हुआ । नाटक भारतेंदु हरिश्चंद्रके जीवनचरित्रपर आधारित है । नाटककारका कथन है कवि भारतेंदु के चरित्र में मुझे वही आकर्षण मिला जो किसी महाकवि को उसके चरित्र नायक से मिला होगा। आकर्षण के भीतरसे प्रेरणाकी लहरे मिलती है, मुझे भी मिली और मैंने यह नाटक लिख दिया (१).

नाटक में कवि भारतेंदु की रईसी वृत्तीयोंकी चर्चा है। नाटक का कथानक विश्रृंखलित है । इसमें तीन अंक है । दृष्य परिवर्तन का विधान नही है ।

(१०) मृत्युंजय (१९५८)

संस्कृति प्रधान जीवनी नाटकों की कडी के रुपमें एक दूसरे नाटकका प्रकाशन जून १९५८ में हुआ । गांधीजी की जीवनी के आधारपर कथानक की संयोजना की गई है। नाटक में गांधीजीको प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनन्य समर्थक तथा लोक नायक को रुपमें प्रस्तुत किया गया है । नाटकके माध्यमसे गांधी विचारधाराको अभिव्यक्ति मिली है। नाटक तीन अंकोमे विभाजित है । दृष्य परिवर्तनका विधान नही है। नाटकमें स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की हिंदुस्थानी भाषाका स्वरुप भी मिलता है ।

.. ४८

(१) समस्या नाटककार मिश्र डॉ.भाटी पृष्ठ १६९ संस्करण प्रथम १९७९ एम. फिल.

(११) जगद्गुरु (१९७८)

यह मिश्रका अंतिम संस्कृति प्रधान जीवनी नाटक है, जिसका प्रकाशन सन १९७८ में हुआ । नाटक का निर्माण आदि शंकराचार्य के गौरवमय व्यक्तित्व एवं उनके महान कार्योंकी आधारभूमि पर हुआ है। इसके माध्यमसे देशकी सांस्कृतिक राष्ट्रीयता को बल मिलता है । नाटकमें आठवी शती के भारत का चित्रण हुआ है । तत्कालिन धार्मिक सांस्कृतिक सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितीयों को व्यक्त करने का नाटक कारने प्रयत्न किया है । जगद्गुरु न शंकराचार्य की अधिकारिक कथाके साथ मंडन मिश्रकी पताका प्रासंगिक कथा भी है। इसमें मुख्य घटनाओं की अधिकता है। इस नाटकमें शंकर विश्वरूप तथा भारती तीन पात्रों को प्रमुखता प्रदान की गई है जो अपने ऐतिहासिक एवं अलौकिक व्यक्तित्व के साथ चित्रित हुए है । नाटक में तीन अंक है । द्वन्द्वोंका का प्रधान नही है ।

(१२) अपराजित (१९८१)

सांस्कृतिक पौराणिक नाटकोंकी परंपरामें मिश्रके इस नाटकका प्रकाशन सन१९८१ में हुआ । इस नाटकका कथानक भी चक्रव्यूह की तरह महाभारतकी कथापर आधारित है । महाभारत प्रसिध्द द्रोणाचार्य पुत्र अश्वत्थामा की वीरता का प्रदर्शन इसमें नाटककारने सफलता पूर्वक किया है। नाटक के माध्यमसे पांडवोंका छल कपट एवं अन्यायपूर्ण शास्त्र विरुध्द चरित्र एवं कौरवोंका न्याय पूर्ण शास्त्र सम्मत चरित्र यहा उभरा है । नाटक कारका कथन है इसमें वर्णित घटनाएँ महाभारत के अछूते रहस्योंका उद्घाटन करती है । नाटकका सारा वातावरण पांडवोंके विरुध्द है ।

नाटक के प्रमुख घटनाओंका आधार महाभारत होते हुए भी उसमें नाटककारकी कल्पना का समन्वय महाभारत के विरुध्द है" (१) नाटकमें तीन अंक है। उसमे दृष्य परिवर्तनका कोई विधान नही है। एकही प्रमुख आधिकारिक कथा है। पौराणिक पात्रों के साथ एक काल्पनिक नारी पात्र माधवी भी है।

(१२) चित्रकूट :

सांस्कृतिक पौराणिक नाटकोंकी शृंखलामें यह नाटक अगली कडी है। जो सन १९६२ मे प्रकाशित हुआ। नाटककी कथा वाल्मिकी की "रामायण" और तुलसी के "मानस" के आयोध्या कांडसे लि गई है। रामकथाका यह मार्मिक प्रसंग नाटकमे का भरत के ननिहालसे आयोध्या लौटने से लेकर राम - भरत मिलन तक है। नाटकमें मातृप्रेम और कर्तव्य प्रेम पूर्ण सफलता के साथ चित्रित हुआ है। नाटक की भूमिकामें मिश्र ने लिखा है -

" इस देशमें जन्म लेकर जो कवि इस कथाके किसी अंशपर कवि कर्म न करे तो वह कभी उऋण नही हो सकता" । (२)

संभवतः मिश्र ने अपनेको इसी ऋणसे उऋण करनेके लिये इस नाटककी रचना की है। नाटक में त्रेतायुगीन वातावरण की झलक मिलती है। नाटकमें तीन अंक है। उनमें दृष्य परिवर्तन का विधान नही है। भरत वाक्य नंदिपाठ और गीतियोजना नही है। एकही प्रमुख आधिकारिक कथा है। लक्ष्मण और जानकी के संवादोंमें झुककर मृगमांस लाते उनकी भेदसे दीपक जलाने और उसेही जानकी द्वारा केशविन्यास करने के प्रयोगोंसे लोक विश्वास एवं लोक निष्ठाको धक्का लगता है।

..५०

(१) समस्या नाटककार - लक्ष्मी नारायण मिश्र डॉ. कणीसिंह भाटी प्रथम संस्करण पृष्ठ १६८.

(२) चित्रकूट भूमिका मिश्र या अनुभव पृ.२ लक्ष्मीनारायण मिश्र

-५० -

(१४) धरतीका हृदय :

सांस्कृतिक पैतिहासिक नाटकों की परंपरामें इस नाटक का प्रथम प्रकाशन सन १९६२ मे हुआ । यह नाटक चंद्रगुप्त की माता देवकीके उध्दार और यवनोंसे मातृभूमि के उध्दार की कहानीपर लिखा गया है । नंदवंश के अंतीम दिनों के भारतका वातावरण नाटक में व्यक्त हुआ है । पैतिहासिक घटनाओंको नाटककारने अपनी नीति मान्यताओं कल्पना, एवं संभावनाओंके आधारपर बदल दिया है । चाणक्य के पैतिहासिक स्वरुपको नये ढंगसे प्रस्तुत किया है मूल कथानक में प्रासंगिक कथाओं के साथ बहुतसी गुण्य कथायें की है । नाटकमें बौध्द धर्मका विरोध यत्र तत्र दिखाई पडता है । राष्ट्रियता की भावना और जातीय गौरवको अभिव्यक्ति मिली है । धरतीका रहस्य तीन अंको मे विभाजित है । इन अंको का दृष्योंमें विभाजन नही है । गिती योजना का अभाव है । रंगमंचकी दृष्टिसे पंद्रह पृष्ठों में लगातार देवकी के नेपथ्यम कथनों के कारण अस्वाभाविक वातावरण निर्मित हुआ है ।

(१५) वीरशांत :- (१९६७)

मिश्रके सांस्कृतिक नाटकोंकी कडी का अंतीम नाटक वीरशांत है । जिसका प्रकाशन १९६७ में हुआ । इसनाटकमें हुणोंकी उस संहार लिलाका वातावरण उभर आया है । जिसमें वह और उत्तर पश्चिम समुद्रसे लेकर नर्मदा के तटतक राजवंश उखड गए । नगरियाँ महानगरियाँ, ग्राम जान -पद सबके सब मिट गए । इस नाटकमें मिश्रजीने चाणक्य और पुष्य मित्रकी कोटीके अलौकिक आचार्य कालमणिको प्रस्तुत किया है। नाटककी पैतिहासिक पृष्ठभूमिमें भारतीय संस्कृतिका गौरवशाली स्वरुप व्यक्त हुआ है । नाटक के

.. ५१

नाटक के कार्य व्यापार एवं उसमें वर्णित घटनाएँ नाटककारकी कल्पना एवं मौलिक प्रतिभा पर आधारित है । यह नाटकभी मिश्र के अन्य नाटकोंकी तरह तीन अंकोंमें विभाजित है । इन अंकोका दृश्योंमें विभाजन नही है नाटक में तीन गीतोंकी योजना भी है ।

---

(८) मिश्री के समस्या नाटकोंमें व्यक्त समस्याएं :

मिश्रजी के प्रत्येक सामाजिक नाटकोंमें कोई ना कोई समस्या व्यक्त हुई है । उनके " सन्यासी " नाटकमें किरणमयी तथा मालती के प्रेमकी समस्या को चित्रित किया है । किरणमयी विलास तथा असफल मनोभाव तथा मालतीका प्रेम बुद्धीवाद समन्वित प्रेमकी भावनापर अवलंबित है । विश्वकांत का चरित्र संघर्षोंसे भरा है जिसके कारण प्रो. उमाशंकर एक ईर्षाका पात्र बनता है । मालती बुध्दिवादी होने के कारण वह प्रथाप्रमा-वादी और बुध्दिवादी दृष्टीके [redacted] आधारपर उमाशंकरसे विवाह कर समझौता करती है । किरणमयी भी प्रो. दीनानाथसे विवाह कर अनुबंध स्थापित करती है तथा मुरलीधरसे अपनी उद्दाम वासनाओं को शांत करती है । किरणमयी के प्रेम मे भारतीय वृध्द विवाह (अनमेल विवाह) कीसमस्या पर [redacted] है ।

(१) सन्यासी मे व्यक्त समस्याएँ विभिन्न रुप है । प्रेमकी समस्या समाजोन्मुख है ।

१) प्रेमकी समस्याके माध्यमसे सहज आवेगोंपर आधारित वृत्तियोंका निरुपण

२) बुध्दिवादी दृष्टिकोणके माध्यमसे प्रेम का वैवाहिक रुप

.. ५२

एवं बुध्दिके माध्यमसे सहज वृत्तियोंके दमन के कारण कारण अवचेतनका चेतनसे विरोध

३) सामाजिक विषमताओंसे अद्भुत गावृत्तिका अंकार दर्शने विस्तार और विश्वकांत के माध्यमसे आदर्शवादी दृष्टि - -कोणकी प्रस्थापना ।

इन्हि तीनों आधारपर " सन्यासी " नाटक की समस्या उसकी घटना-ओंकी एक संबध्दता से व्यक्त करती है । मालती - उमाशंकर एवं विश्वकांतका त्रिकुट घूमता रहता है । इब्सन और बर्नार्ड शॉ की भांति मिश्रकी नारीमें प्रेमका आधारतो अनुभूति का भावावेग है । पर विवाहका आधार सामाजिक समझोता, प्रेममे आत्मरति एवं अहंका प्राधान्य है, तो विवाह में उसका परिष्कार है । प्रथम मे परिकल्पनात्मक लोकका विचार है तो द्वितीय में वास्तविक संसारकी पुष्टि है ।

किरणमयी दीनानाथ और मुरलीधर का त्रिकुट है । मालती विश्वकांत का अवचेतन, मालती उमाशंकर के चेतन स्वरुपकी झाँकीका निदर्शन करता है। वही किरणमयी दीनानाथका चेतन, किरणमयी मुरलीधर के अवचेतनकी ओर उन्मुख हो गया है । प्रेम एवं वासनाके आधारपर मिश्रजीके मानसिक अंतर्द्वंद्व की मनोवैज्ञानिक ग्रन्थिकी दिखाई है ।

" सन्यासी " में विश्वकांत का जीवन आरंभ से अंत तक भावुकिक भावना में घूमता है ।

१) मालती और विश्वकांतका प्रेम

२) प्रेमकी रोमानी प्रवृत्ति से प्रतिधात्मिक होकर उसे सामाजिक

रुपमें अभिव्यक्त करनेका प्रयास जिसके कारण उसके जीवनमें संघर्ष होकर आदर्शवादी दृष्टिकोण पैदा हो जाता है। इसे हम दो प्रकारके सैध्दांतिक रुपसे विश्लेषित कर सकते है।

(१) मनोवैज्ञानिक २) सामाजिक

मनोवैज्ञानिक आधारपर मालती विश्वकांत का प्रेम तथा सामाजिक अर्थोमें मालती विश्वकांतका प्रेम और उसमें व्युत्पन्न संघर्ष। फिरभी हमें यह स्मरणमें रखना पडेगा कि, मिश्रजीके नाटक ना तो विशुध्द प्रायबसिन है और न मानसीय। उसमें दोनोंके सिध्दांतोंका समन्वय तक है। या तो तीसरे स्वरुपकी निर्मिती है। इनकी मौलिक उद्भावनामें तीन बातें है।

(१) प्रेमकी समस्याके चित्रणमें आवेग

(२) संघर्ष और सामाजिक समझौतेके चित्रण मे यथार्थवाद

(३) एशियायी संस्के रुपमेंआदर्शवाद

प्रथम मे मानवकी सहज वृत्ति। द्वितीयमें पाश्चात्य प्रभावित यथार्थवादी दृष्टिकोण, तीसरेमें भारतीय आदर्शवादकी तात्विकता है। (१)

(२) राक्षसका मंदिर - में

जिनके अंतर और बाह्य वर्तनमें फर्क है। उन्हीकेलिये यह नाटक लिखा गया है। मुनीश्वरके रुपमें वासना एवं अंतर्द्वंद्व झूलस रहा है। उसीमें भावना और सहानुभूतिकी वृत्तिका भी एकीकरण है। एक ओर अच्छे तथा दूसरी ओर कामपीडाका दर्शन होता है। वही व्यक्ति समाजका आधारस्तंभ माना जाकर इब्सन के इसविचारकी पुष्टि करता है। वेश्या सुधारमें मातृमंदिरकी स्थापना वह करता है। रामलाल भीअपनी संपत्ती इसी कारणमें

.. ५४

(१) समस्या नाटककार ल.ना.मिश्र - कवी मंह भाटी पृ.४९ प्रकाशन काल १९७८

लगाता है । समाज सेवाकों की मक्कारीका चित्रण यह है ।

नाटकका कथानक, सभ्य मानवके सहजावेग और सामाजिक कुंठित व्यक्तियोंको त्याग कथा है । मुनीश्वर वैवाहिक प्रगतिशीलता एवं अचेतन मनका प्रतिक है।

कोई भी व्यक्ति वातावरणके कारण अच्छा या बुरा बनती है । अपनी प्रवृत्तीयों को फिरभी वह छिपा नहीं सकती । इस नाटकमें प्रतिक अर्थ भी है । मनोवैज्ञानिक रुपसे इसकी समस्या आचरणवादी है । मानवीय क्रियाओंका विचार इसमें अधिक है । और अंतश्चेतना का संकेत कम स्वच्छंद अभिव्यक्ति को समाज रुपी न्यायालय मानता नहीं ।

इस नाटकमें व्यक्त समस्याएँ निम्नप्रकारे की है ।

(१) आजके शिक्षित समाजकी दुदशा यही है कि, वह विचारोंमें प्रगल्भ है । पर मानसिक स्थिती भी उतनीही प्रखर है । आधुनिक सभ्यताने मानवकी सहजवृत्तियों को कितना दमित किया है । मुनीश्वर के रुपसे इस समस्यापर प्रकाश डाला है।

(२) रामलाल एक कल्याणवादी व्यक्तित्व है । फिरभी सुधारवादी दृष्टिकोण उसमें है । अनैतिकताका वह प्रतिक है पर नैतिकताका उपदेश सामाजिक सुधारके लिये करता है । अगरी के कर्तव्य में पवित्र कर्तव्य ज्यादा है । बाह्य संबंधोंसे कुंठित व्यक्तित्व अपनी अंतरिक उन्मत्तताका प्रकाशन करता है ।

(३) नाटकका हर पात्र मै क्या हूँ ? मुझे क्या चाहिये ? इसके भीतर होनेके बावजूद मुझे क्या हेता है ? इसका खोज लेकर करता है । अंतमें समाजवादी दृष्टिको स्वीकार करता है । जिसमें मानवीय तथा

.. ५५

- ५५ -

सामाजिक प्रवृत्तियोंका ... करता है और बुध्दि अनुभूतिको पराजित कर देती है । लक्ष्मी नारायण मिश्र ने इस नाटकमें इस प्रकार विश्वकी सार्वभौम समस्या को उभारा है ।

(२) मुक्तिका रहस्य

मुक्तिका रहस्य मे मिश्रजीने ... पापकी मुक्तिका रहस्य बताया है । आशा उमाशंकरसे प्रेम करती है । इस प्रेमकी चरम ... सीमा अर्थात उमाशंकरकी पत्नी को आशाने विष देना और उसकी हत्या करना आशाने दो पाप किये है । एक उमाशंकर के पत्नी की हत्या और दूसरा त्रिभुवन नाथ के साथ व्यभिचार । आशा स्वयं को अपवित्र समझकर उमाशंकर का ... त्याग करती है और अगले जन्ममें उसकी पत्नी बननेकी अपेक्षा करती है ।

मुक्तिका रहस्य की समस्या रोमांस और आदर्श के प्रति बौध्दिक दृष्टीकोण की समस्या है । संपूर्ण नाटक आशा उमाशंकर और डॉ. त्रिभुवननाथ के माध्यमसे चलता है। उमाशंकरके पत्नी की हत्या एवं उमाशंकरका परित्याग डॉ. त्रिभुवन के साथ मिलकर उमाशंकर की पत्नीकी हत्या और अंतमे डॉ. त्रिभुवन नाथ के मानवीय गुणोंसे प्रभावित होकर अपना जीवनसाथी ... बनाने का निर्णय । तीसरा पक्ष है उमाशंकरका अध्यात्मके सीमाओंका स्पर्श करता है । रोमानी वृत्तिके धरातलपर प्रेमकी समस्या इस नाटकमें खडी की है । जिसे लेखक भारतीय आध्यात्मकी परंपरा और पाश्चात्य यथार्थवादी दृष्टिकोणसे सुलझाता है । फिरभी भारतीय अध्यात्मवाद और पश्चिमात्यवादकी यथार्थ अभिव्यक्ति इस नाटकमें है । अतएव मुक्तिका रहस्य याने स्वच्छंदतापर यथार्थ वादकी और यथार्थवादमें विजय पाने के लिये आदर्श को अपनाता है ।

.. ५६

(४) सिंदूरकीहोली :

इस नाटकमें वैवाहिक समस्याएँ बताई है । मनोरमा एक प्रकारकी समस्या लेकर चलती है । जो विवाहके सामाजिक तथा विधान कोही सर्वस्व समझाती है। चंद्रकला दूसरे प्रकारकी समस्याको प्रस्तुत करती है । जो मानसिक वर्गको सामाजिक रूढियों एवं वैवाहिक परंपरा ओंसे श्रेष्ठ मानती है। मनोरमा दरबकाफि वाल विधवा है । नट वर्षकी युवती डेप्युटी कलेक्टर मुरारीलाल के यहीं आश्रय पाती है । मनोजशंकर की दृष्टि भी उसकीओर चलती है। मनोरमा, मनोजशंकर, एवं मुरारीलाल के बीचमें होती है ।

संसारकी समस्याएं तराजू के पलड़ेसे नहीं नापी जा सकती । वे बुध्दिसे पैदा हुई है, बुध्दिसे ही खत्म होगी ।

चंद्रकला की समस्या दूसरे प्रकारकी समस्या है । वैवाहिक रूढियों की परवाह न कर प्रथम दर्शन से उत्पन्न प्रेमकी प्रेरणा से मानसिक वर्गको महत्व देती है। मनोजशंकर की ओर प्रथम प्रेम दिखाई देता है पर रजनीकांत की एकही मुस्कान पर वह मिट जाता है । रजनीकांत विवाहित है। एक बच्चेका बाप है । लेकिन चंद्रकला भावुकता की अधिकता से मरणोन्मुख रजनीकांतके हाथसे अपने मस्तिष्कपर सिंदूर लगाकर आत्म समर्पण कर देती है ।

भगवंतसिंह भी रिश्वत खोरीकी समस्या लेकर आता है । रजनीकांत को मरवा डालनेमें तनिक भी वह हिचकिचाता नहीं । मुरारीलाल पापके ऊपर पाप करता है । मनोजशंकर का पुत्रवत पालन करता है । अपने पुत्री से उसका विवाह करनेके लालचमें उसे आश्रित कर देता है । बादमें प्रेम करने लगता

- ५७ -

है ।

सिंदूर की होली मे व्यक्त समस्याएँ हम निम्न परिधियोंमे बाँट सकते है ।

(१) फ्राइड ने काम वासनाको माना है । नरनारी उन्मुक्त रुपसे प्रेम करते है । मूलमें इस नाटकमें नारीके प्रेम और विवाहसे पूर्ण संबन्धी समस्या है। इसमें विवाह और सामाजिक कुप्रथाओं की ओर संकेत किया है । नरनारीका उन्मुक्त प्रेम स्पष्ट रुपसे दिखता है।

(२) इस नाटक के नारी पात्र मनोरमा चंद्रकला के चरित्रोंमें सामाजिक विरोध का निदर्शन है । मनोरमा का विवाह [redacted] समाजशास्त्र विधानके निर्मूलन की गाथा है । उसमें बुध्दवादी दृष्टिकोणसे समर्पण कर देती है ।

(३) प्रेमवृत्तीके उद्दाम अभिव्यंजनाके साथ विधवा विवाह कीसमस्या भी दूसरा पक्ष है । मनोरमा बालविधवा होने के बावजूद भी कौमार्य स्वीकार नहीं करती । क्योंकि मनकी भावनाका अपेक्षा वह शारिरीक भोग वासना को अधिक तृप्ति का आधार मानती है । वह मानसिक एकता भी चाहती है । इसमे यथार्थ की अपेक्षा आदर्शवाद की ओर रुझा दिया है ।

(४) चंद्रकला की अतिशय भावुकता का प्रतिफलन है । इसके अतिरिक्त अन्य समस्यायें सामाजिक आधारप्रेम और सेक्स न होकर आर्थिक है ।

(५) इस नाटकमें व्यक्त समस्या पक्षके साथ उसके बाह्य पक्ष का भी संतुलित करती है। मानवाचरित कामवासना एवं अधिकारी ग्रंथिपर आधारित है । इसमें प्रेम और लोभ वृत्तिमें समस्याओं का संघर्ष दिखता है ।

.. ५८

- ५८ -

(६) मनोजशंकर की कुंठा और अपने पिताके हत्याका रहस्य भी एक अंतर्द्वंद्व की समस्या है । प्रत्येक पात्र आंतरिक संघर्ष से ही जूझता है ।

(७) चंद्रकलाकी कहानीका अंत अनुमानित पारक रोमानी है । और मनोरमा का आदर्श परक आध्यात्मिक है । मनोजशंकर का जीवन मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य का प्रतिक है । मुरारीलाल सामाजिक कुवृत्तियों का व्याख्याता । अर्थात् इस नाटककी आत्मा भारतीय है । उसमें बुध्दिवादी दृष्टिकोण कम है ।

(५) <u>राजयोग</u> :

राजयोग में वैवाहिक जीवनकी विडंबनाका चित्रण है । चंपा आधुनिक शिक्षित पदवीधर है । सहशिक्षामें वह नरेंद्र से प्रेम करती है । कहानीका शत्रुसूदन धनके चंपासे विवाह करनेके उपरांत नरेंद्र को जीवनसे वैराग्य होता है । शत्रुसूदन चंपाको दुखी करता है। चंपा अपनी माँसे गजराज द्वारा रखे अनैतिक संबंधसे उत्पन्न बालिका है । शत्रुसूदन, गजराज, चंपा तीनोंके मनमें द्वंद्व शुरु है ।

राजयोगमें निम्नस्तरोंकी समस्यायें है ।

(१) नाटककी कथावस्तुमें चंपा का नरेंद्रसे प्रेम प्रमुख है । जो असफल होनेके कारण सामाजिक समझौता का प्रयासकरता है ।

(२) शत्रुसूदन धनके बलपर चंपासे विवाह कर लेता है । इस विवाह द्वारा मिश्रजी ने बहुविवाह प्रथाकी ओर संकेत किया है। मानव को अपनी इच्छाओं के विपरित कैसे समझौता करना है । प्रेमकी प्रवृत्तियोंको कैसे दबाया जा सकता है । यह बताया गया है । चंपाकी माँकी अनैतिक संबंध द्वारा

.. ५९

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

नाटक कारने एक नयी समस्या का उद्घाटन किया है ।

(२) नरेंद्र का राग विराग में परिवर्तित होता है । मेस्मेरिझम की क्रियाके आधारपर चंपा शत्रुदन में समझौता करा देता है ।

नाटकके विश्लेषण में निम्नबाते प्रमुख है ।

(१) नरेंद्र का मानसिक ग्रंथिके कारण राग, विराग, और चंपा एवं शत्रुदन में समझौता का प्रसार दिखता है । नरेंद्र का व्यक्तित्व एक मनोवैज्ञानिक समस्या है ।

(२) चंपाकी समस्या मोनोवैज्ञानिक, एवं सामाजिक समस्या है । यह नरेंद्र को अपना हृदय समर्पित करने के बाद भी शत्रुदनकी पत्नी बनना और चाहती है । सामाजिक आयोंसे समझौता कर भावुकता आदी दृष्टिको छोड देती है ।

(३) नाटकमें बहुविवाह की समस्या है । जिसकी ओर नाटककारने बुध्दिवादी दृष्टिसे न देखकर आदर्शवादी दृष्टिसे देखा है । नरेंद्र-चंपा-शत्रुदन बुध्दिवादी कम और आदर्शवादी अधिक है । यह नाटकमें कथानकका परिवेश सामाजिक है पर उसका धरातल अतिमानसिक है ।

(६) आधीरात :

इस नाटकमें नारीकी विवशताका चित्र खिंचा गया है । मायावती विलायतमें शिक्षित एक आधुनिक ढंगकी नारी है । दो व्यक्ति उससे प्रेम करते है । दोनोंमे पारस्परिक ईर्ष्या होती है । एककी मृत्यु दूसरे के पिस्तौलसे होती है । "आधीरात" नाटकमें निम्न समस्याओंका नियोजन है ।

.. ६०

(१) इसमें चिरंतन नारीत्वके रागात्म धरातलपर आधारित नारी स्वतंत्रता एवं मर्यादित विवाहका तुलनाका चित्रण है । मायावती परदेशीय विचारोंसे प्रभावित है । भारतीय विवाह क्या है उसे मालुम नहीं । मायावती नारी आदर्श के माध्यमसे उसे दर्शनिक तत्वोंको बताती है कि जिसमें नारीके व विकास एवं आदर्श की कल्पना समाजके सामने रखी है। प्रकृति एवं पुरुषका अस्तित्व मान्य किया गया है ।

(२) नाटक कारने यथार्थ वादी तत्वोंके स्थान पर अतिकल्पना एवं अध्यात्म प्रेमका प्रयोग किया है । भारतीय आदर्शवाद की ओर संमोहन किया है ।

(३) प्रकाशचंद्र के रुपमें एक कल्पना शील भावुक व्यक्तिका चित्र अंकित किया है। उसकी मानसिक दुर्बलता ओं से वह ग्रासित है । उसका अस्थिर व्यक्तित्व उसके जीवनमें संवेदनाओं और अनुभूतियों की विकृतियाँ करता है कि, उसकी बुद्धि उसकी भावनासे आतंकित दृष्टिगत होती है ।

(४) नाटकमें मानवकी पाशविक वृत्तिपर व्यंग्य किया है । अर्थात एक नारीपर कई पुरुषोंका अधिकार एक आकर्षण दिखाया गया है ।

आत्मसंयम और आत्मत्याग जैसे आदर्श समाज के स्वर्गका निर्माण कर सकते हैं । फिरभी यह नाटक बौद्धिक निरुपण न होकर आदर्श का मनोरम अनुसंधान है । मायावती द्वारा स्वच्छंदवृत्ति सामाजिक परिवेशमें नारी समस्या उत्पन्न कर देती है । मानवका पाशविक वृत्ति केवल समाजके अनुशासन में ही व्यवस्थित संयमित, रह सकती है ।

-•o-

-६१ -

(५) लक्ष्मीनारायण मिश्री के सामाजिक नाटकोंका उद्देश्य :

(१) सन्यासी

नाटककारका उद्देश्य - नाटक केवल कलाके लिये न होकर जीवनके लिये है। जीवनको जीना चाहिये तथा समझना चाहिये। ताकि वह अभिव्यक्त हो सके। प्रस्तुत नाटकमें लेखकने चुने हुए पात्र हमारे जीवनसे चुने है। उनमेंसे हमारे गुणावगुणोंकी उत्पत्ति और जीवनकी वास्तविकता है। शिक्षा क्षेत्रमें व्याप्त अनैतिकता और भ्रष्टाचार उनकी आलोचनाका विषय रहा। उमाशंकर - दीनानाथ का यही दृष्टिकोण दिखता है। राजनीति एवं साहित्य अलग नहीं रखा जा सकता। एशियाई संघकी परिकल्पनाके द्वारा नाटककारकी दूरदर्शिता भी दिखती है। साथही भारतीयताका पोषण, उत्सर्ग और त्यागके प्रति जनभाव जगाना और कर्तव्य के लिये अपना सर्वस्व अर्पित करनेकी प्रेरणा देना यही एक उद्देश्य है। लक्ष्मीनारायण मिश्रने स्वयं जो देखा वह उन्होंने ज्यों का त्यों यथार्थ रूपसे और ईमानदारीके साथ बताया है।

(२) राक्षसका मंदिर

प्रस्तुत नाटकमें नाटककारने परिवर्तित एवं परीवर्तनोन्मुखी करि परिवेश का प्रकाशन किया है सामंती युगकी विशिष्ट रितियोंका आकलन और समाज सुधारकोंका निरुपण इसमें है। समाज सुधार होना आवश्यक है। पर समाज तभीसुधारेगा जब स्वार्थ दूर रखा जायेगा। मुनीश्वर उस प्रवृत्तिका प्रतिक है जिसमें बुध्दि और तर्क आगे किसीभी वस्तुको स्थान नहीं है। रामलाल सामंती शानका जोकता निदर्शन है। जो शान सब खत्म हो गयी है। अशगरी नारीका वह रूप प्रगट करती है जो अच्छा स्वरूपका वरूप

..६२

निकालकर नो उत्साह और उससे जीवनको नया मोड देनेका प्रयत्न करता है । वह अपने पैरोंपर खडे हो कर अन्य नारियोंमें भी चेतना पैदा करती है । रघुनाथ इस कर्तव्य च्युत संभ्रमयुक्त आजके साहित्यकारका प्रतिनिधी रुप है । जिसे छुदके योग्य मार्गका ज्ञान नही है। जो अपना कर्तव्य समझाता नहीं जिसे अधिकारोंके लिये संघर्ष का ध्यान नहीं है । इसिलिये वह धार्मिक होनेके बावजूदभी अकिंचन प्रवृत्ति का है । आजके समाज में हमें सर्वत्र मुनीश्वर के ही दर्शन होते है । आगरी जैसे व्यक्तित्व नगण्य ही होंगे । आजके परिदृश्यमें हर स्थानपर राक्षसके मंदिर दिखाई देंगे । ये मंदिर खत्म नहीं हो सकते । बढतेही जाते है । इसी समाजके व्यंगपर लेखकने विचार किया है ।

(१) मुक्तिका रहस्य

प्रस्तुत नाटकमें मिश्रजीका उद्देश्य स्त्री और पुरुषाके चिरंतन अन्योन्याश्रित संबंधोंकी व्याख्या करना रहा है । उनकी दृष्टि में सत्य के अनेक पहलू हो सकते है । इस नाटकमें स्त्री-पुरुषाके संबंधोके दो स्पष्ट पक्ष स्वाभाविक रुपसे निरुपित किये गये है । आशा - उमाशंकर का स्त्री-पुरुषा संबंध जो है वह उदात्तता, पारिवारिक त्याग और समर्पण भावनासे युक्त है। दूसरा स्त्री-पुरुषा संबंध है आशा और डॉक्टर त्रिभुवन नाथका । यह संबंध स्वेच्छासे निर्मित नहीं वरना बलात् स्थापित हुआ है। पर अंतमें दूसरा ही संबंध सफल होता है ।

नारी-पुरुषाक संबंध के लिये मिश्रजीने बुध्दिवाद का सहारा लिया है। क्योंकि स्वयं मिश्र मानते है कि बुध्दिवाद एक तीक्ष्ण सत्य है । हमारी चेतनाको जगाकर हमारे भीतर नविन जीवन स्फुर्ती पैदा करनेके लिये । इस

प्रकार उन्होंने इस चिरंतन समस्यापर बौध्दिक दृष्टिसे विचार किया है । दोनों पक्षोंका एक समन्वित रूप प्रस्तुत किया है। इसी दृष्टि को सामने रखकर नाटक के उद्देश्य की ओर लक्ष्मीनारायण मिश्रजी बढे है ।

(४) सिंदूर की होली

इस नाटकमें नाटककारने प्रमुख रूपसे विधवा -विवाह और चिरंतन नारीत्वकी समस्याको व्यक्त किया है । इसलिये नाटक में मनोरमा बाल-विधवा है । चंद्रकला जो अविवाहित रहते हुए भी अपनेको विधवा समझती है । इन दोनों के वैधव्यमें अंतर है । फिरभी नाटककारने विधवा विवाह के प्रति अपनी सहमती नहीं दी है। रजनीकांत के जरिये उन्होंने कानुनी सुरक्षा का प्रश्न खडा किया है । अपराध छिपाना जिसे नहीं आता उसे सजा दी जाती है । इसके अतिरिक्त नाटककारने और भी एक प्रयोजन रखा है, की पाश्चात्य विचारधारा का भारतीय करण करना । मनोरमा - चंद्रकला इसके दो उदाहरण है । जहाँ मनोरमाका वैधव्य समाजको स्वीकृत है । वही चंद्रकला का वैधव्य अमान्य है । इसके द्वारा नाटकमें बुध्दिवाद प्रिय माना गया है । और उसका प्रतिपादन किया गया है ।

(५) गरुडध्वज

सामंती युगके लोकजीवनकी आलोचना करना , भारतीय नारीके प्रेमी और अंत में पतिको वरीयता दिलाना, सामाजिक स्थितीयोंका आकलन आधुनिकताका समावेश और प्रकृत प्रेम मार्गसे कर्मयोग को श्रेयस्कर प्रमाणित करना, आदि नाटकको रचनाके उद्देश्य है । यही कर्मयोग नाटकको अग्रेसर करनेमें सफलता प्राप्त कर लेता है ।

(६) आधीरात

इस नाटकका उद्देश्य विशेषतः नारीसे संबंधित भारतीय संस्कृति और भारतीयताका पोषण है । इसी कारण नाटककारने मायावतीका पाश्चात्य संस्कृतिका परिवर्तन भारतीय संस्कृतिमें कराया है । पाश्चात्य संस्कृतिको भारतमें फैशन के रूपमें माना जाता है। जिसे नाटककार असंतोषपूर्ण भावना से देखता है । नाटककारकी दृष्टिमें भारतीय नारी पाश्चात्य संस्कृति अपनायेगी तो उसका परिणाम अयोग्य रहेगा । मानव मूल्य एवं आदर्शोंका प्रतिपादन भी यहाँ आवश्यक है । भारतीय आदर्श स्वार्थसे अधिक परार्थपर बल देते है । व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि को बोलते है । नारीको पुरुषा की अनुगामिनी ही समझाते है । जन्म जन्मांतरवाद और कर्मवाद का भी समर्थन एवं प्रतिपादन उन्होने किया है । नारी शिक्षा को उपयोगी मानते हुए भी उन्होंने नारीकी शोभा गृहिणी और पवित्रताके रूपमें ही प्रतिष्ठीत करनेका प्रयास किया है ।

इस प्रकार मिश्रजीके लिखे हुए सामाजिक नाटक अपने एक विशिष्ट उद्देश्य से लिखे गये है । जिनके हर विचारोंमें भारतीयता कूट कूटकर भरी पडी है । जो समाज एवं देशके लिये उपयुक्त है । इस प्रकार अपने सभी समस्या नाटकों में मिश्रजी का उद्देश्य सामाजिक समस्याओंका यथार्थ अंकन करना रहा है ।

-०-

(५) <u>लक्ष्मी नारायण मिश्रके नाटकोंको विशिष्ट वर्गमें अंकित करनेके कारणोंका विश्लेषण</u> :

(१) <u>सन्यासी</u>

मिश्रके समस्या नाटकोंमे स्पष्ट दिखाई देता है कि, उनमें किसी ज्वलंत सामयिक समस्याका विवेचन है। उसी प्रकार उसमें अतिरंजना, भावुकता और रोमांसका बहिष्कार कर यथार्थ अंकन अपना नेका आग्रह है। और तीसरा उसमें समस्याका बौद्धिक तर्क वितर्कपूर्ण विवेचन, है । इसी निकषा के आधारपर "सन्यासी" समस्या नाटक बन सकता है । क्योंकि तीनो विशेषताये उसमें अनुस्युत हो इसमें स्वच्छंद प्रेमकि समस्याका आधुनिक युगके संदर्भमें चित्रण किया है। समस्याका बौद्धिक तर्क वितर्कपूर्ण विवेचन यथार्थ दृष्टिसे करनेका आग्रहभी है । इसी कारण सन्यासी नाटक सामाजिक नाटक बन सकता है।

(२) <u>राक्षसका मंदिर</u>

लक्ष्मीनारायण मिश्रने इस नाटकको प्रतिकोंकि माध्यमसे व्यंजित करनेका प्रयत्न किया है । मूर्तताकी प्रधानता होने के बावजूद भी प्रतिकार्थताको प्रधानता दी है । असगरी को नारीका प्रतिक मानकर नाटकका उद्देश्य नाना है यह नाटक फिरभी विचार प्रधान नाटककी श्रेणीमें रखना ही अधिक योग्य है क्योंकि प्रतिककी अपेक्षा विचार अधिक है । स्वच्छंद प्रेमका चित्रण भी इसमें है इसलिये समस्या नाटक बन सकता है। आधुनिक व्यक्तिवादी मानवके भिन्न भिन्न स्वरुपोंके यथार्थ चित्र दिखानेमें नाटककारने कुशलता दिखाई है और

.. ६६

इस आधारपर केवल यथार्थवादी कहनाभी असंगत है । पर फिरभी प्रमुखता विचार प्रेक्षणकी भूमिका इसमें है । इसिलिये यह नाटक विचार प्रधानही माना जाता अधिक समीचिनी समझा जाता है।

(१) मुक्तिका रहस्य

इस नाटक का शिल्प संगठन पूर्ववर्ती नाटकोंसे सर्वथा भिन्न है। इसमें सामाजिक समस्याके बजाय जीवनका अपना दृष्टिकोण लक्ष्मी नारायण मिश्र ने व्यक्त किया है। कथानक तथा सब पात्र भी इस दृष्टिसे रखे है । वातावरण में बौध्दिकता नहीं है । विचार प्रेक्षणीयता की दृष्टिसे नाट्य विधानको विचार प्रधान नाटकही कहना योग्य ।

(४) राजयोग

इस नाटकमें समस्या प्रधान एवं विचार-प्रधान नाटक दोनोंकी विशेषताओंका सुंदर सामंजस्य हुआ है । समस्या नाटककी दृष्टि से इसमें बौध्दिकता का पूर्ण विवेचन एवं ज्वलंत समस्याका चित्रण है । फिरभी अधिक मात्रामें विचार प्रधान नाटक ही विशेषत: दिखता है । नाटकका कथानक असाधारण है । पात्रभी जनजीवनके मानसिक उद्गारोंका सही प्रतिनिधित्व नहीं करते । नाटककारका उद्देश्य किसी समस्याका चित्रण करनेकी अपेक्षा समस्याओंके प्रति विचार करनेके दृष्टिकोण को प्रेरित करना है । अत: इसे भी विचार प्रधान नाटककी श्रेणीमें रखना आवश्यक है ।

-६७ -

(५) सिंदूर की होली

इस नाटकमें समस्या नाटककी सभी विशेषतायें विद्यमान है । इसमें तीन ज्वलंत समस्याओंपर तर्कयुक्त तथा बौध्दिक विवेचन है। फिरभी यह समस्या एवं घटना प्रधान नाटक है। समस्या एवं घटना दोनोंका सुंदर सामंजस्य है । समस्याओंके विद्यमान होनेके कारण यह समस्या प्रधान नाटक है ।

(६) आधीरात

इसमें समस्या नाटककी सभी विशेषतायें मौजूद है। बौध्दिकता तर्कवितर्क पूर्ण विवेचन और ज्वलंत समस्याका चित्रण विद्यमान होनेके कारण इसे समस्या नाटकको विधाके अंतर्गत रखनाही ठीक होगा ।

-०० -